♦ तृतीय अध्याय ♦

" अमृतलाल नागर के 'सुहाग के नूपुर ' उपन्यास में समाज जीवन ".

1 ' समाज ' शब्द का अर्थ और व्याप्ति

1.2 सुहाग के नूपुर मे समाज जीवन
1.2.1 पुरुषप्रधान संस्कृति
1.2.2 विवाह प्रथा
1.2.3 शोषिता सुहागन
1.2.4 वेश्या प्रथा
1.2.5 देवदासी प्रथा
1.2.6 रीति - रिवाज
1.2.7 स्वागत - प्रथा
1.2.8. आदरातिथ्य
1.2.9 परम्परानिर्वाह
1.2.10 विवाहोत्सव
1.2.11 नृत्योत्सव
1.2.12 इन्द्रोत्सव

2 वर्ग संघर्ष -

2.1 आर्थिक दृष्टि से

2.1.1 उच्च वर्गीय समाज
2.1.2 निम्न वर्गीय समाज

2.2 सामाजिक दृष्टि से

2.2.1 कुलवधु
2.2.2 नगरवधु

3 आर्थिक समस्या

3.1 वेश्या वर्ग की आर्थिक समस्या

3.1.1 चेलम्मा और पेरियनायकी
3.1.2 पान्सा

3.2 दुराचार के कारण निर्माण हुई समस्या.

3.2.1 पान्सा
3.2.2 कोवलन

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY KOLHAPUR

4 **धार्मिक वातावरण**

5 **राजनीतिक वातावरण**

6 **आत्मिक प्रेमसंबंध**

6.1 कोवलन - माधवी
6.2 कोवलन - कन्नगी
6.3 पान्सा - पेरियनायकी
6.4 भारतीय प्रेमी - चेलम्मा
6.5 पिता - पुत्र
6.6 पिता - पुत्री
6.7 माता - पुत्री

7 **टूटते हुए पारिवारिक जीवन का चित्रण**

7.1 कोवलन - कन्नगी - माधवी

8 **शीलभ्रष्ट व्यक्तियों की समस्या**

8.1 कोवलन
8.2 महादंडाधिकारी
8.3 पान्सा
8.4 राजपुरुष
8.5 महालिंगम और पापनाशम

निष्कर्ष

तृतीय अध्याय

तृतीय अध्याय

" अमृतलाल नागर के 'सुहाग के नूपुर ' उपन्यास में समाज जीवन'

समाजिक यथार्थ की अभिव्यक्ति के चित्रण का सबसे सशक्त साहित्यिक माध्यम है 'उपन्यास'। उपन्यास मानव के वास्तविक जीवन को चित्रित करता है । उपन्यास में युगीन सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, धार्मिक, राजनैतिक, शैक्षिक आदि परिस्थितियों का यथार्थ चित्रण मिलता है । उपन्यासे में परिवेश के प्रति क्षोभ, व्यवस्था तंत्र की अव्यवस्था, यथार्थ की पीड़ा, दारूण और भयावह स्थिति में टूटते हुए व्यक्ति, स्वार्थ, अनास्था, अकेलापन, कुंठा, जीवन में व्याप्त असंगतियाँ आदि समस्याओं का यथार्थ और मार्मिक चित्रण होता है ।

नागर एक विशुध्द भारतीय उपन्यासकार है । उनके उपन्यासों ने भारतीय समाज में अमरत्व प्राप्त किया है । उन्होंने व्यक्ति और समाज के द्वंद्वत्मक रूप को अपने उपन्यासों के माध्यम से चित्रित किया है । हिंदी उपन्यास साहित्य में भारतेन्दु युग से लेकर आधुनिक काल तक के सभी उपन्यासकारों ने भारतीय समाज के किसी - न किसी पक्ष का चित्रण किया है । भारतीय समाज के चित्रण की दृष्टि से आधुनिक युग के उपन्यासकारों में अमृतलाल नागर का एक विशिष्ट स्थान हैं ।

नागर ने स्वातंत्र्यपूर्व और स्वातंत्र्योतर भारतीय समाज जीवन की झाँकियाँ अत्यंत व्यापक रूप में चित्रित की है । उनके बारे में डॉ. हेमराज कौशिक लिखते है, " नागर व्यक्ति तथा समाज को परस्पर सापेक्ष स्वीकार करते हैं । उनके उपन्यासो में आज के सामाजिक संक्रमण एवं उथल-पुथल के मध्य व्यक्ति की द्वंद्वमय स्थिति का उद्‌घाटन किया गया हैं ।" [1]

1. 'समाज ' शब्द का अर्थ और व्याप्ति -

मानवीय व्यक्तित्व की सार्थकता समाज में ही होती है । मानव के जन्म के बाद ही उसके व्यक्तित्व का क्रमिक विकास प्रारंभ होता है, जो मृत्युपर्यंत होता ही रहता है । जन्म के बाद सबसे पहले एक शिशु माता - पिता परिवार के सम्पर्क में आता है । उनसे प्रेरणा पाकर ही व्यक्तित्व गठन के पहले चरण में वह पहला पाठ अपने माता- पिता द्वारा ही सीखता है । माता-पिता के मृदु व्यवहार से वह कोमल तथा उनके कठोर व्यवहार से बात-बात पर उत्तेजित होना सीख लेता है । उसकी अनिवार्य आवश्यकताओं की पूर्ति भी वहीं होती है । किसी भी व्यक्ति की पहचान उसके व्यक्तित्व से होती है । व्यक्तित्व में केवल शारीरिक गठन ही नहीं; बल्कि उसके संपूर्ण गुण और विशेषताएँ भी होती है । प्रत्येक व्यक्ति को जीवन जीने के लिए

BABASAHEB AMBEDKAR UNIVERSITY

कोई- न कोई आधार खोजना ही होता है । समाज में रहकर आत्मनिर्भर होना और आजीविका उपार्जन करना उसके लिए अनिवार्य है । प्रत्येक व्यक्ति का अपना व्यवसाय होता है, कर्म होता है । उसी परिप्रेक्ष्य में उसे समझा जा सकता है ।

समाज निरन्तर गतिशील एवं परिवर्तनशील है । जिन परम्पराओं को हम अपनी पुरानी पीढी से प्राप्त करते हैं, वही समाज की संस्कृति हैं । समाज और उसकी संस्कृति एक-दूसरे से जुडें हैं ; किन्तु हर आनेवाली पीढी पिछली पीढ़ी से ज्यों - की - त्यों परम्पराएँ ग्रहण नहीं करती। उसमें कुछ परिवर्तन कर देती है । यही परिवर्तन समाज का विकास करता है ।मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है । समाज में रहकर ही उसका पूर्ण विकास होता है । समाज के साथ व्यक्ति किसी - न - किसी प्रकार अपनापन महसूस कर मिलजुलकर सामाजिक संबंधो का निर्माण करता है । व्यक्ति का प्रभावा समाज पर पडता है और सामाजिक परिस्थितियों के अनुरूप व्यक्ति अपने आपको बदलता है ।

भारतीय समाज जाति, वर्ण, वर्ग में बँटा हुआ बहुस्तरीय समाज हैं । प्रस्तुत उपन्यास में जातिभेद, वर्णभेद नहीं दिखाया हैं । लेकिन वर्ग भेद के अंतर्गत उच्चवर्ग और निम्नवर्ग में संघर्ष दिखाया है । भारतीय समाज में उच्चवर्ग के अंतर्गत राजा, महाराजा, जमींदार, महाजन, सेठ, साहुकार आदि लोगों का चित्रण हुआ है । तो निम्नवर्ग के अंतर्गत वेश्याओं का चित्रण हुआ है । वेश्याओं मे भी कुलीना-अकुलीना भेद दिखाया है ।

अमृतलाल नागर सामाजिक उपन्यासकार होने के कारण उनके उपन्यासों मे समाज जीवन का चित्रण अनिवार्य है । " उपन्यासकार के लिए समाज वह आधार पीठिका है । जहाँ वह स्वयं जन्म से लेकर जीवन विकासशील सोपानों पर चढता हुआ सामाजिक जीवन का स्वानुभूत चित्र समाज के लिए प्रस्तुत करता है । समाज से जो कुछ वह ग्रहण करता हैं, उसमें कलात्मक रंग भरकर सामाजिक मनोरंजन करते, हुए जीवन की विशिष्ट प्रति छवि चित्रित करता है ।" [2] प्रस्तुत उपन्यास में समाज के विशिष्ट वर्ग का चित्रणं हुआ है । इसमें वेश्या जीवन के अंतरंग की झाँकी प्रस्तुत की गई है। वेश्याओं के 'इंटरव्यू' व्दारा उनकी वास्तविक जिंदगी का यथार्थ चित्रण समाज के सामने रखा है । उन्होंने चरित्रों को इस रूप में चित्रित किया है कि वे कोरे आदर्शवादी न रहकर बिल्कुल यथार्थ जीवन के लिए गए प्रतीत होते है, यह उपन्यास समाज में व्याप्त दुख, दयनीयता, घुटन, बेबसी, अत्याचार, पाशविकता, बीभत्सता आदि को अनावृत्त कर

हमारे सामने रख देता है । समाज के अंधकारपक्ष के साथ-साथ प्रकाश को भी देखने - दिखाने का प्रयत्न किया है । इसलिए निःस्वार्थ त्यागी एवं परोपकारी व्यक्तियों के चित्र भी अंकित है ।

1.2 ' सुहाग के नूपुर में समाज जीवन

आलोच्य उपन्यास में तत्कालीन समाज के यथार्थ रूप को प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। समाज में रहनेवाली सभी बातों को यहाँ चित्रित किया गया है । समाज परिवारों से बनता है । परिवार में जो व्यवस्था होती है उसे यहाँ बखुबी बतलाने का प्रयास किया गया है । समाज किस प्रकार से अलग अलग हिस्सो मे बँटा रहता है, उसमें नारी का स्थान क्या होता है, नारी चरित्र की विशेषताएँ उसे श्रेष्ठ या कनिष्ठ किस प्रकार बना देती है, यह उपन्यासकार ने अत्यंत सहज रूप से अपने पात्रों के जीवन चित्रण द्वारा स्पष्ट किया है । समाज में रहनेवाले व्यक्ति को सामाजिक बंधनों का पालन करना ही पड़ता है। विशेष रूपसे पुरुष प्रधान इस समाज में पुरुष अपनी इच्छा से जीता है, तो स्त्री पुरुष की इच्छानुसार जीती है ।

प्रस्तुत उपन्यास में तत्कालीन समाज व्यवस्था का यथार्थ चित्रण हुआ है । समाज जीवन की कुछ विशेषताएँ निम्नलिखित है -

1.2.1 पुरुषप्रधान संस्कृति -

हिंदी उपन्यास साहित्य में प्रारंभिक युग से लेकर आधुनिक काल तक के सभी उपन्यासकारों ने उपन्यासों में पुरुषप्रधान संस्कृति का चित्रण किया है । सदियों से भारतीय संस्कृति में पुरुष का सर्वोच्च स्थान रहा है । इसलिए पुरुष हमेशा से ही मनमाना व्यवहार करता आया है । जिसके परिणामस्वरूप वह स्त्रियों पर अन्याय - अत्याचर करके उसकी स्थिति और भी हीन-दीन बनाता है । पति चाहे कैसा भी क्यों न हो, लेकिन पत्नी उसके कुकृत्यों पर पर्दा डालकर, उसे नया जीवन आरंभ करने की शक्ति प्रदान करती है । अपनें पति को परमेश्वर मानकर पूजती है । किसी की भी परवाह न कर अपने पति को प्राणप्रण से चाहकर उसके प्राणों की रक्षा कर सतित्व तथा कुललक्ष्मी के गौरव को बढ़ाती है । ऐसी ही नारी कन्नगी का चित्रण इस उपन्यास में हुआ है । 'सुहाग के नूपुर ' उपन्यास में नागर ने पुरुषप्रधान संस्कृति को चित्रित कर उसके कारण स्त्रियों पर होनेवाले अत्याचारों का अत्यंत मार्मिक चित्रण किया है ।

प्रस्तुत उपन्यास में उत्तर-दक्षिण में सर्व श्रेष्ठ व्यापारी धनी-मानी सेठ मासात्तुवान के इकलौते पुत्र कोवलन का विवाह दूसरे धनी-मानी सेठ मानाइहन की इकलौती पुत्री कन्नगी के साथ तय होता है । यह मालूम होते हुए भी कोवलन नृत्योत्सव में वेश्या माधवी के प्रेमाकर्षण में

बँधता है। कोवलन - कन्नगी के विवाह के बारे में पता चलते ही माधवी अपने अधिकारों की माँग करती है । प्यार मुझसे करके तुम कन्नगी के साथ क्यों तथा कोवलन माधवी से कहता है, " वह तो जग की रीति निभाऊँगा प्रिये ! अरे, मैं श्वसुर के धनरूपी घी को होम का स्रुवा बनकर निजकुल के ऐश्वर्ययज्ञ की आहुति बनाने जा रहा हूँ, इससे मेरी लक्ष्मी की लौ ऊँची उठेगी ।" [3] केवल धन, और कुलगौरव के लिए वह कन्नगी से विवाह करता हैं । विवाह के बाद कन्नगी को अपनी दासी मान अपनी काम - विलासिता की पूर्ति माधवी के द्वारा करता है । बाद में वह इतना गिर जाता है कि माधवी की दासियों के साथ भी नशे में विलासरत रहता है । तो कभी समुद्रतट पर सस्ती वेश्याओं के साथ अपनी कामाग्नि को बुझाता है । विलासी कोवलन के जरिए नागर ने यह दिखाया है कि पुरुष स्त्री को केवल भोग-विलास की वस्तु मानकर उसे केवल भोगता है ।

अन्य पुरुष पात्रों के जरिए नागर ने पुरुषप्रधान संस्कृति के दर्शन कराए है । सेठ मासात्तुवान और मानाइहन अपने पुत्र तथा जमाता को दोषी न मानकर वेश्या माधवी को नगर से बाहर निकालने के लिए आंदोलन करते है । तो महालिंगम और पापनाशन जैसे छोटे व्यापारी भी अपनी पत्नियों को सति का दर्जा देकर उसे मार - पीटकर धन ले जाकर वेश्या पर लुटाते है । इस प्रकार कावेरीपट्टणम् के सभी युवक निठल्ले, कामुक बनकर वेश्या और मदिरा के नशे में अपने जीवन को बरबाद करते है। इसमें उन्हें कुछ गलत नहीं लगता । देशी व्यापारियों के साथ - साथ विदेशी व्यापारी भी जहाँ पर भी व्यापार के बहाने जाते है, वहाँ पर अपना मन बहलाने के लिए वेश्याओं के साथ रंगरलियाँ मनाते है । जैसे उनके जीवन का उद्देश्य नशा और कामविलास ही है । इस उपन्यास में पान्सा सेठ को वेश्या पेरियनायकी के साथ विलासरत दिखाया है । एक ही स्त्री के साथ वह जीवनभर रहता है, लेकिन उसके साथ विवाह नहीं करता । बाद में मासात्तवान के मरने के बाद कोवलन को फँसाकर उसके व्यापारिक कोठियों पर कब्जा कर रिश्वत देकर व्यापारियों को अपनी तरफ कर, वेश्याओं के कोठों पर व्यापारिक सौदे कर नगर के अन्य युवकों को भी कामविलास में डुबाए रखता है । उपन्यास के अंत मे राजपुरुष जैसे पुरुष के द्वारा माधवी का गर्व नष्ट कर उसके एकपुरुषव्रत को ठेंस पहुँचाकर उसे वेश्या बनने पर मजबूर करता है । यह सब वह महाराज के आदेशानुसार करता है । इससे पता चलना है कि, 'यथा राजा तथा प्रजा ' के अनुसार महाराज से लेकर नगर का हर एक व्यापारी तथा राज्याधिकारी कामविलास में डूबा है ।

नागर ने पुरुषप्रधान संस्कृति का चित्रण करके यह दिखाया है कि, पुरुष अपने काम-विलास की पूर्तता के लिए ही नारी को वेश्या बनने के लिए मजबूर करता हैं। इसलिए वेश्या समस्या अब विश्वव्यापी बनी है । समाज में वेश्या को कभी आदर तथा सम्मान का स्थान नहीं मिल सकता; क्योंकि पुरुष कभी उसके साथ शादी कर उसे सती तथा कुललक्ष्मी का स्थान नहीं देता । पुरुषों की ऐसी घिनौनी वृत्ति के कारण ही पूरी स्त्री जाति पीड़ित है । इसका समग्र चित्रण उपन्यास में हुआ है । पुरुषप्रधान संस्कृति में पुरुष की इच्छा ही महत्त्वपूर्ण होती है, यह दिखाने में नागर को सफलता मिली है ।

1.2.2 विवाह प्रथा -

भारत में ही नहीं पूरे विश्व में विवाह संस्था का स्थान सर्वोच्च माना जाता है । पुरुष और स्त्री के मिलाप से ही विश्व मे मानव जाति का संसार बढ़ा है । पुरुष और स्त्री पर हुए विवाह संस्कार को वैध माना जाता है । उनकी संतानों को समाज में आदर का स्थान मिलता हैं । नर-नारी दोनों मिलकर ही अपने जीवन - प्रवाह को आगे बढाते है । भारतीय संस्कृति में विवाह संस्था को सर्वोच्च माना जाता है । विवेच्य उपन्यास में में विवाह - समारोह के भव्य आयोजन का चित्रण कराकर पति पत्नी के अटूट रिश्ते को दिखाया है । अग्नि को साक्षी मानकर सात फेरों के पवित्र रिश्ते को दिखाकर भारतीय नारी इस रिश्ते को निभाने के लिए सारी दुनिया से संघर्ष कर अपने पति परमेश्वर को कैसे मृत्युदंड से बचाती है, इसका यथार्थ चित्रण किया है ।

कावेरीपट्टणम नगर के सर्वश्रेष्ठ महाधनी सेठ मासात्तुवान का बेटा कोवलन और मानाइहन की बेटी कन्नगी का विवाह तय किया जाता है । धनी सेठों की इकलौती संतानो के विवाह - समारोह में देश - विदेश के छोटे - बड़े सभी व्यापारियों को नगर के सारे लोगों को विवाह में शामिल होने तथा वर-वधु को शुभाशिर्वाद देने के लिए आमंत्रित किया जाता है । ब्राह्मण, श्रावक, धर्मपंडित, भिखारियों को खूब दान-धर्म किया जाता है । विवाह याने दो पवित्र आत्माओं का मिलन माना जाता है । कोवलन और कन्नगी का विवाह समारंभ प्रथानुसार चित्रित किया गया है ।

भारतीय समाज में विवाह का महत्त्व अक्षुण्ण है । इसलिए वेश्या होकर भी माधवी और चेलम्मा विवाह करने के लिए ललायित है । सती तथा कुललक्ष्मी बनकर समाज में चार लोगों से

आदर पाना चाहती है । इस प्रकार ' सुहाग के नूपुर' उपन्यास में विवाह संस्कार को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया है ।

1.2.3 शोषिता सुहागन -

'सुहाग के नूपुर' इस उपन्यास की नायिका देवी कन्नगी को शोषिता सुहागन के रूप में चित्रित किया गया है । कोवलन से विवाह होने के बाद वह कुललक्ष्मी के सारे अधिकार तो पाती है लेकिन सुहागरात को ही कोवलन उसे वेश्या माधवी के कोठे पर ले जाता है । वहाँ पर वह अपने पति को मदिरा के नशें में धुत होकर दासियों के साथ विलासिता में डुबे देख उसके सारे सपने टूट जाते है । इतना सब देखने के बाद भी कन्नगी श्वसुरद्वारा पूछने पर अपने पति के करतुतों पर पर्दा डालकर अपने कुल की लाज बचाना चाहती है ।

कोवलन को माधवी के साथ कई महिने बाहर रहकर आनेपर भी वह एक शब्द से भी डाँटती नहीं और माधवी को भी सौतियाड़ाह से कुछ अपशब्द नहीं बोलती । माधवी जब कोवलन के पुत्री की माता बनती है, तब वह कई उपहार भेजकर उसकी प्रत्येक माँग को पूरी करती है । माधवी जब अपना कोठा जलाकर कोवलन की हवेली में रहने आती है, तो कन्नगी दिनरात, माधवी, कोवलन और मणि-मे-खला की सेवा में जुट जाती है । घर की आर्थिक स्थिति ठीक न होने पर अपने आभूषण बेचकर घर का खर्चा चलाती है । लेकिन यह सब बताकर अपने पति को कष्ट नहीं देना चाहती । माधवी कन्नगी के सारे अधिकार छीनकर कोवलन से कहकर उसे घर से बाहर निकालती है । कोवलन के पीटने पर वह श्वसुरव्दारा बनाई गई धर्मशाला में जाकर रहती है । पिता को उनका सब धन दान करने को कह संन्यास लेने की सलाह देती है । जब चेलम्मा कोवलन को बेसुधी की स्थिति में समुद्रतट से लाती है, तब कन्नगी पति की सेवा करके अपने नूपुर बेच पति को नया व्यापार शुरू करने के लिए प्रेरणा देती है ।

मदुरा में कोवलन को जब चोर घोषित किया जाता है। तब अपने पति को निर्दोष सिध्द कर प्राणदंड से बचाने के लिए चंडिका का रूप धारण करती है । सति - सावित्री बन यमराज से अपने पति के प्राण वापस लाती है । इस प्रकार प्रस्तुत उपन्यास में कन्नगी शुरू से लेकर उपन्यास के अंत तक शोषित स्त्री के रूप में हमारे सामने आती है । कोवलन के सभी अन्याय सहकर भी अपने पति के बारें में कभी गलत विचार नहीं करती इससे उसमें निहित पतिव्रता पत्नी के गुण लक्षित होते है ।

1.2.4 वेश्या प्रथा :

वेश्यावृत्ति संपूर्ण मानव जाति की समस्या है । आज सारे विश्व में वेश्यावृत्ति ने अपना स्थान जमा लिया है । वेश्यावृत्ति स्त्री के शरीरविक्रय से संबंधित है । हजारों वर्षों से स्त्री केवल पुरूष के उपभोग का साधन बनी है । प्राचीन काल में स्त्री पुरुषों के लिए सहवास मुक्त था, अर्थात् एक पुरुष अनेक स्त्रियों से और एक स्त्री अनेक पुरुषों से कामसंबंध स्थापित कर सकती थी । परंतु विवाह प्रथा ने इस मुक्त समागम को नियंत्रित कर दिया और विवाह बाहय काम संबंधो को व्यभिचार माना गया। परंतु अविवाहित युवक, विधुर काम संबंधो में विविधता की इच्छा रखनेवालों की समस्या बनी रही, उन्होंने विवाह बाहय संबंधो की माँग की । जिन स्त्रियों ने यह विवाह बाहय काम संबंध धन तथा अन्य चीजों या सुविधाओं के बदले में परपुरुषों से यौन संबंध स्थापित किए, उन्हें वेंश्या कहा गया । वेश्याओं के संदर्भ में लज्जाराम शर्मा जी ने कहा है कि " यदि वेश्याएँ हमारे समाज से उठा दी जायें तो घर की बहू - बेटियाँ बिगडेंगी ।" [4] सतियों की मान रक्षा के लिए तथा आरोग्य की दृष्टि से समाज में वेश्याओ का होना आवश्यक माना गया है ।

'सुहाग के नूपुर ' इस उपन्यास में माधवी, चेलम्मा, पेरियनायकी, नंदिनी, ललिता, राजम्मा आदि कई पात्रों के द्वारा इस समस्या पर प्रकाश डाला है । स्त्री जीवन के इस शापित अंग को उपन्यास का केंद्रबिंदु बनाकर वेश्या जाति की करुण वेदना को चित्रित कर वेश्या भी एकपुरुषव्रत साधने के लिए ललायित होती है इसका यथार्थ चित्रण माधवी, पेरियनायकी आदि द्वारा किया गया है। साथ ही साथ उनमें भी कुलीना अकुलीना भेद स्पष्ट किया है । वेश्यावर्ग इलंङ्.गाइ, वलंङ्.गाइ इन दो वर्गों में बँटा था । तात्पर्य भारत में वेश्या प्रथा प्राचीन काल से चली आ रही है ।

1.2.5 देवदासी प्रथा :-

भारतीय समाज में प्राचीन काल से देवदासी प्रथा का प्रचलन है । देवदासी याने छोटी बच्चियों को भगवान तथा मंदिरों को भेंट रूप में अर्पित किया जाता है । वास्तव में इन बच्चियों को मंदिर का पुजारी अपने विलास की सामग्री बनाता है । धर्म की आड़ में देवदासियाँ एक प्रकार से वेश्या जीवन ही जीती है । लेकिन समाज में वेश्या का पग-पग पर अपमान होता है , वहाँ देवदासियों को आदर सम्मान प्राप्त होता है । विवेच्य उपन्यास में पुहारेश्वरम् की प्रमुख देवदासी रुद्रम्माल को नगर के प्रत्येक समारोह, उत्सव तथा अन्य सार्वजनिक स्थानों पर महाराज

के बाई और बैठने का स्थान प्राप्त होता है । नृत्योत्सव की शुरूवात भी उसीके द्वारा भगवान नटराज की स्तुति में पद गाकर की जाती है ।

देवदासियों में प्रतिष्ठित - अप्रतिष्ठत भेद माना जाता है । इसमें ' दत्ता ''हृत्ता 'आदि वर्गो में देवदासियों को बाँटा जाता है । स्वयं देवसेवा में अर्पित होनेवाली देवदासियाँ प्रतिष्ठित 'दत्ता ' वर्ग में सम्मिलित होती थी । कहीं से उड़ाई गई तथा गलत कामों की वजह से मंदिर में भेट स्वरूप चढ़ाई जानेवाली लड़कियों को हृत्ता वर्ग में सम्मिलित किया जाता है । इस उपन्यास में महादंडनायक के अपराध स्वरूप महाजनों की दो । लड़िकियाँ देवदासी बन मंदिर में रहती है । तब 'रूद्रगोपिका' वर्ग की देवदासी उसमें से एक लड़की की हत्या करती है । तो दूसरी 'भृत्या' देवदासी बन मंदिर में रहती है । जब वह दूसरी लड़की 'दत्ता' वर्ग में सम्मिलित होकर देवसेवा में अर्पित होनेवाली थी, तो प्रतिष्ठित देवदासियों ने विरोध कर उसे 'हृत्ता ' वर्ग में शामिल किया । इस प्रकार देवदासियों में भी प्रतिष्ठित - अप्रतिष्ठित भेद दिखाया है । बुढ़ापे में मंदिर के पुजारी का जी भरने पर इनको मंदिर का पुजारी अन्य धनी सेठ को बेचता है । कई देवदासियाँ अपने बुढ़ापे में उसी मंदिर की सीढ़ियों पर भिखारन के रूप में बैठी होती है । वेश्याओं की तरह ही इनकी हालत बुरी होती है । नागर ने मंदिरो में चलनेवाले व्यभिचार का यथार्थ रूप में चित्रिण किया है ।

1.2.6 रीति - रिवाज -

भारतीय समाज में बच्चो को जन्म से लेकर मृत्य तक के विभिन्न क्रिया - कलापों को परम्परानुरूप निभाना पड़ता है, उन्हें ही रीति -रिवाज कहते है । रीति - रिवाजों का पालन कर लोग एक प्रकार से अपनी संस्कृति को सुरक्षित रखने का प्रयास करते है । रीति - रिवाज, प्रथा परम्परा ही भारतीय संस्कृति का मूलाधार है । डॉ. रामधारी सिंह दिनकर के अनुसार " संस्कृति सुख नहीं, सदाचार है, संस्कृति ताकत नहीं विनम्रता है, संस्कृति संचय नहीं त्याग है , संस्कृति विजय नहीं, मैत्री है । संस्कृति का परम रूप अहिंसा है । विरोधी के मन को भी क्लेश न देना । सुसंस्कृत व्यक्ति दुराग्रह नहीं करेगा, विरोधियों के पक्ष को भी आदर देगा । " [5] इसका पालन करने से ही हम भारतीय संस्कृति में निगृत रीति-रिवाज तथा प्रथा - परम्पराओं का निर्वाह कर सकेंगे । 'सुहाग के नूपुर ' उपन्यास में नागर ने भारतीय समाज के रीति - रिवाज, प्रथा-परम्पराएँ , उत्सव, पर्व, खान-पान, वेशभूषा, तीज-त्यौहार, ब्राह्मण पूजा, अतिथियों का आदर-सत्कार, संस्कृतियों का विस्तृत वर्णन किया गया है । विवाहोत्सव, इन्द्रोत्सव, नृत्योत्सव

आदि उत्सवों का अत्यंत सुंदर ढंग से चित्रण किया है । इन उत्सवों का वर्णन देख मानों ऐसा लगता है कि एक - एक घटनाएँ पाठकों के दृष्टिपटल के सामने घटित हो रही है । भारतीय समाज रीति - रिवाजों का अजायबघर है । रीति-रिवाजों तथा प्रथा - परम्पराओं का अंकन करने में नागर जी सिध्दहस्त हुए है। ब्राह्म मुर्हत, स्वागत समारंभ, विवाह समारंभ, समाज परपंरा आदि का उपन्यास में यथार्थ चित्रण किया है ।

1.2.7 स्वागत प्रथा -

उत्तर-दक्षिण भारत के सर्वश्रेष्ठ धनी व्यापारी सेठ मासात्तुवान का इकलौता बेटा कोवलन सफल व्यापारिक यात्रा कर अपने नगर वापस लौटता है, तो उसके स्वागत समारोह का भव्य आयोजन किया जाता है । सजेबजे सुंदर बैलोंवाले रथ, पालखियों और घोडों को सजाकर सँवारी पर बैठकर नगर के धनी व्यापारी कोवलन के स्वागत के लिए आए थे । पताकाओं से मणिस्तभों को सजाने से नौकाघाट की रौनक बढ़ गई थी । सेठ मासात्तुवान ने अपने पुत्र को संदेश भेजा था कि, " ब्राह्म मुहूर्त में ही वह अपनी नौकाओं के साथ नगर में प्रवेश करें ।आज उत्तम दिन है ।" [6] उसी आज्ञा का पालन कोवलन करता है । इससे उनकी प्रथाप्रियता दिखाई देती है ।

कोवलन के नगर में प्रस्थान करते देख शंख और मंगलवादय गूँजने लगे । दक्षिणा के लालच में आए पंडित अपने-अपने संप्रदायों के मंगलवाक्य उच्चारने लगे । कोवलन ने आते ही पिता के चरण छूकर आशीर्वाद लिया । भावावेश की स्थिति में पित्रा-पुत्र दोनों एक-दूसरे से मिले । रीति-रिवाजानुरूप कुलपुरोहितों ने कोवलन को कावेरी गंगा की पूजा के बाद ही नगर में प्रवेश करने को कहा गया । वहाँ पर वेश्या माधवी और पेरियनायकी दोनों नदी पूजा करके जा रही थी । इससे स्पष्ट है कि भारतीय समाज आज भी धर्म, रूढ़ी, प्रथा, परम्पराओं में जकड़ा हुआ दिखाई देता है और तो और वेश्याओं को भी रीति-रिवाजों का निर्वाह करते दिखाया है ।

1.2.8 आदरातिथ्य :-

कहा जाता है कि 'अतिथि देवो भव' अर्थात अतिथि देव के समान है । अतिथि का आदर-सत्कार करने पर बहुत पुण्य मिलता है । ईश्वर प्रसन्न हो उसकी कृपादृष्टि रहती है, ऐसी धारणा है । कोवलन - कन्नगी के विवाह पर सेठ मानाहरन और मासात्तुवान ने देश-विदेश के व्यापारी तथा नगर के अन्य लोगों का आदरतिथ्य सुंदर ढंग से किया । अतिथियों को विवाहमंडप में बैठने के लिए उन्तम आसन थे । अतिथियों के पधारने पर सुंदर, सुवासित पुष्पमालाओं से उनकी वंदना कर उनको यथोचित स्थान दिया जाता है । अतिथियों के बैठनेपर सेवकगण उनके

चरण पोछकर गंधलेपन करते है । मधुर पेये तथा खाने का प्रबंध दिया किया गया था । अतिथियों के मनोरंजनार्थ संगीत - नृत्य का आयोजन किया गया था। अतिथियों का आदरातिथ्य इसलिए किया जाता है कि वे प्रसन्न मन से वर-वधु के लिए शुभाशीर्वाद दे ।

विवाह के पश्चात कोवलन - कन्नगी व्यापर के लिए विदेश जाते है । वहाँ पर सिकंदर ने इनका आदरातिथ्य बहुत अच्छे ढ़ंग से किया, जैसे ही सभामंडप मे प्रमुख अतिथि पहुँचे वैसे ही वादक - वादिकाओं के दल ने हार्प, बाँसुरी और अलगोजे बजाएँ । दासियाँ कलात्मक प्यालों में मदिरा भरकर अतिथियों को मदपान कराती है । सेठों को मालाएँ पहनाकर, सुगंधित फूलों के गुच्छे देती है, उनके पैरों के सुगंधि चूर्ण मलकर, उनकी खिदमद में नृत्य प्रस्तुत करती है । नारी, मदिरा, गीत, वाद्य और भोजन के द्वारा अतिथियों को खुश कर दिया जाता था। यह सबकुछ व्यापारिक लाभ के लिए किया जाता था । तात्पर्य तत्कालीन प्रथा का पालन करते हुए आदरातिथ्य का वर्णन किया गया हैं ।

1.2.9 परम्परा निर्वाह :-

कावेरीपट्टणम् नगर में हर साल 'नृत्योत्सव' में नर्तकियों के कलाप्रदर्शन के बाद विजयिनी नर्तकी को 'कामदेव का नवधनुष' इस उपाधि से पुरस्कृत किया जाता था। नृत्योत्सव में मुख्य सिंहासन पर महाराज बैठते और उनकी बाई ओर पुहारेश्वरम् के मंदिर की प्रधान देवदासी को बिठाया जाता । नृत्योत्सव की शुरूवात देवदासी भगवान नटराज की स्तुति में एक पद गाकर करती थी । उसके बाद ही नृत्य - प्रतियोगिता की शुरूवात होती थी । यह परम्परा सदियों से चली आ रही थी ।

कोवलन - कन्नगी के विवाह में पूजा - पाठ तथा कोई न कोई धार्मिक विधि दिनभर चलते है । रीति - रिवाजानुसार कन्नगी 'सुहाग के नूपुरों' की अधिकारी होती है । बाद में मासात्तुवान अपनी बहु द्वारा मुख्य कोषागार की पूजा करवाकर हवेली की चाबियाँ और सर्व अधिकार परम्परानुसार उसे सौंपते है । जब कोवलन कन्नगी व्यापार के लिए विदेशयात्रा जाते है तो सभी देवी-देवताओं की पूजा कर ब्राह्मण, श्रावकों को अन्न और वस्त्रदान करते है । शूद्र स्त्रियाँ मंगलगीत गाकर उन्हें विदा करती है । नागर ने यहाँ पर सर्वधर्म समभाव दिखाया है । लोगों के मन में धार्मिक आस्था का दीप प्रज्वलीत हुआ दिखाया है ।

माधवी अपनी बेटी का नाम कोवलन के वंशवृक्षपट्ट पर लिखवाना चाहती है । पर कोवलन के खानदानी वंशवृक्षपट्ट मणिमेखला का नाम अंकित होने से परम्परानुरूप उसे

प्रतिष्ठा प्राप्त होगी । लेकिन कोवलन वेश्यापुत्री का नाम वंशवृक्षपट्ट पर लिखवाकर अपने रीति-रिवाज तथा परम्पराओं को तोड़ नहीं सकता । सामाजिक प्रतिष्ठा के कारण उसका विरोध करता है और अपने वंश की परम्परा का पालन कर अपने कुल की मान-मर्यादा की रक्षा सप्रयत्न करता है ।

इस प्रकार नागर ने रीति-रिवाज तथा प्रथा-परम्पराओं के प्रति आस्था दिखाई है । कुलवधुओं के साथ साथ वेश्याओं को भी इनका निर्वाह करते हुए दिखाया है । नागर जी ने प्रस्तुत उपन्यास में रीति - रिवाज तथा परम्पराओं को इन्द्रोत्सव, विवाहोत्सव, नृत्योत्सव के जरिए इस प्रकार चित्रित किया है ।

1.2.10 विवाहोत्सव :-

अमृतलाल नगर ने 'सुहाग के नूपुर ' उपन्यास में नगर के दो महाधनी सेठ मासात्तुवान का बेट कोवलन और मानाइहन की बेटी कन्नगी के विवाह का चित्रण सुंदर ढ़ंग से किया है । इन दो सेठों का वैभव मिलकर कोवलन - कन्नगी की संतानो को संपूर्ण भारत में अद्वितीय गौरव मिलेगा, यह विचार कर विवाह तय किया गया इनके विवाह का शुभ अवसर कावेरीपट्टणम् के इतिहास में अनोखे चमत्कार से जुड गया । दक्षिण भारत के सर्वश्रेष्ठ दो अतुल धनाधीशों की इकलौती संतानों का प्रणयबंधन समारोह नगर के सभी व्यापारियों के लिए धन कमाने का अनुपम सुयोग साध रहा था। अतिथि व्यापारी लोग जब नगर घुमने जाते तो सभी ओर बरतन, खिलौने तथा अन्य मसालों के पदार्थो के ठेले लगे होते । भिखारी, ब्राह्मण, श्रमण सभी आशीर्वाद बेचकर धन कमाने जाते । नगरभर के सारे लोग नवदांपत्य की जोडी तथा दोनों संबंधी की जोडी की स्तुति करते । सेठ मासात्तुवान ने अपनी बहु के लिए मदुरा की पांड्य पटरानी के नूपुरों जैसे ही नूपुर बनावए, जिसकी सर्वत्र चर्चा थी ।

सप्तमी के दिन ब्राह्म मुहूर्त में कोवलन और कन्नगी का विवाह सभी अतिथियों के सामने संपन्न हुआ । मानाइहन की हवेली में दिनभर वधु के हाथों पूजा-अर्चना तथा होम - हवन चलता रहा । मानाइहन की हवेली को भी नववधु की तरह सजाया, जिसकी जगमगाहट नगरभर में थी । दास-दासियों की काम से फुरसत नहीं थी । हँसी - खेल के वातावरण में पूर्ण नगर आनंदित हो उठा था । विवाहोत्सव में माधवी के नए नृत्याविष्कार प्रस्तुत करने की चर्चा भी गरमा रही थी । क्योंकि सेठ मानाइहन ने ' कामदेव का नवधनुष' पुरस्कारविजयिनी माधवी के साथ - साथ मदुरा, कांची और सिंहल की नर्तकियों को भी अपने नृत्यद्वारा अतिथियोग के

मनोरंजनार्थ निमंत्रित किया था । इस कारण माधवी अपने नगर की मानरक्षा के लिए नित्य-नया कलाविष्कार दिखाएगी यह जनसामान्य का विश्वास था । नृत्यसमारोह के लिए हवेली के निकट विशाल नृत्यमंडप सजाया गया था। केले के थंमे, फूलों और पत्तों की बंदनवार, रंगीन वस्त्रों के चँदोए बड़े ही आकर्षक रीति से सजाए थे ।

मुख्य मंडप स्वर्ण और रजत दंडोपर खड़ा किया गया था । बड़े-बड़े दीपाधार और तूंडावलक्क (लटकाए जानेवाले दीपक) भी ठोस सोने के थे और रत्नों से जडें थे । अतिथियों को बैठने के लिए उत्तम आसनों की व्यवस्था की गई थी । वर-वधु के लिए मुख्य मंडप में स्वर्ण सिंहासन की व्यवस्था की थी । मुख्य मंडप में प्रमुख अतिथि महाराज बलवन के पितृव्य चेर, पांड्य राजकुलों के वंशधर तथा मथुरा, काशी, श्रावस्ती के सेठ आदि प्रमुख बारातियों के लिए आसन सजाए गए थे । सभी अतिथिगण अपने-अपने देशानुरूप रेशमी वस्त्र, कंठे, हार रत्नहार, मुँदरियाँ, कंकण, मुक्त, मरकत, माणिय आदि आभूषणों से लदे विवाहोत्सव में शामिल होने आ रहे थे । सेवकगण सुंदर, सुवासिन पुष्पमालाओं से उनकी वंदना कर उनका यथोचित सत्कार कर रहे थे । लोगों के आसन ग्रहण करने पर सेवक उनके चरण पोंछकर गंध लेपन करते । मधुर पेय तथा खान-पान का खयाल रखकर यथोचित आदर दे रहे थे । श्रेष्ठीगण स्वदेशी तथा कुछ विदेशी गुट बनाकर गप्पेबाजी कर विवाहोत्सव का आनंद ले रहे थे ।

कुछ देर बाद नृत्य - संगीत का क्रम चलता रहा माधवी अपने नृत्य से सबको मुग्ध कर बिजली की तरह अपनी चमचमाट से कोवलन को रिझाती है । इस प्रकार नागर ने दक्षिण भारत के महाधनी सेठों की संतानों के विवाहोत्सव का चित्रण बखुबी किया है । स्वागत समारोह, आदरातिथ्य तथा विवाह में शरीक होनेवाले देश-विदेशी व्यापारी और उनकी चाटुकारिता, दास-दासियों तथा भिखारियों को दानधर्म वर - वधु के लिए शुभाशीर्वाद तथा मनोरंजनार्थ नृत्य, संगीत आदि विविध कारणों से यह विवाह सारे नगर में सालों तक भूलाए नहीं भूलेगा ।

1.2.11 नृत्योत्सव-

हर साल कावेरीपट्टणम् नगर में अन्य उत्सवों के साथ 'नृत्योत्सव ' मनाने की परम्परा थी । नृत्योत्सव में 'कामदेव का नवधनुष' उपाधि से पुरस्कृत होनेवाली नर्तकी को नगर में प्रतिष्ठा तथा मानसन्मान मिलता था । इसमें वेश्या पेरियनायकी की पोष्यपुत्री माधवी इस प्रतियोगिता में हिस्सा लेती है । वह नीच वेश्याकुल की होने के कारण नृत्याचार्य शंकरन मुदलियार माधवी को नृत्य सिखाने से इन्कार कर, प्रतिष्ठित वेश्याकुल की राजम्मा की बेटी

ललिता को नृत्य सिखाते है । अतः वेश्या चेलम्मा जिसने अपनी जवानी में 'कामदेव का नवधनुष' उपाधि प्राप्त की है, वह माधवी को नृत्य सिखाती है । इन दो नृत्यगरुओं की ईर्ष्या के कारण अन्य नर्तकियों का महत्त्व ललिता और माधवी के सामने नगण्य था ।

नृत्यमंडप अतिथिंयो से भरा था । मुख्य सिंहासन पर परम प्रतापी चोल महाराज कारिहर बलबन विराजमान थे । नृत्याचार्य शंकरन मुदलियार और पुहारेश्वरम् के मंदिर की प्रधान देवदासी रुद्रम्माल को भी परम्परानुसार महाराज की बाईं ओर बैठने का स्थान मिला । बाकी सब प्रतिष्ठीत लोगों को गौरव के साथ बिठाया गया । नगाडा बजने के बाद महाराज की आज्ञानुसार रुद्रम्माल ने उठकर भगवान नटराज की स्तुति में एक पद गाकर प्रतियोगिता आरंभ करने के लिए नियम बताए । प्रारंभ में तीन लड़कियों के नृत्य हुए । उनके बाद माधवी को आमंत्रित किया गया ।

माधवी ने सभी लोगों को प्रणाम कर नृत्य शुरू किया । सभी लोग माधवी के नृत्य से प्रभावित होते देख रुद्रम्माल और मुदलियार गंभीर हो गए । ललिता के नृत्य के पश्चात दोनों में श्रेष्ठ कौन ? यह तय करना मुश्किल हो जाता है । अचानक महाराज घोषणा करते है कि निर्णायक एकमत न होने से इस वर्ष का पुरस्कार नहीं दिया जाएगा । नृत्याचार्य और राजम्मा इस बात से खुश थे कि भले ही ललिता विजयिनी न हो लेकिन माधवी भी न जीते । इतने में माधवी बीच सभा में आकर कहती है, " देव ! आज्ञा प्रदान करें ! सभा के सम्मुख श्रीमान महाराजाधिराज की पुनीत सेवा में इस निर्णय के विरुध्द अपनी आपत्ति अति विनम्र भाव से प्रस्तुत करना चाहती हूँ । " [7] महाराज की आज्ञानुसार माधवी और ललिता दोनों एक साथ नृत्य की परीक्षा देने, नृत्य करना शुरू करती है ।

प्रधान नृत्याचार्य मुदलियार इन दोनों की परीक्षा लेने कंजीरे बजाने लगते है । माधवी आत्मविश्वास के साथ लोगों की प्रशंसा पाकर नृत्याचार्य को ललकारती, " और परीक्षा लें महाराज, और.....और.....और । प्रधानाचार्य झुँझला उठते, ललिता तप-तप जाती । इस झुँझालाहट और तपन से ही वे क्रमशः निस्तेज होते चले गए, माधवी चमकती चली गई।" [8] नृत्यमंडप माधवी की वाह-वाह से गूँज उठा । महाराज ने परम्परा के अनुरूप अपने गले की मोतीमाला माधवी के गले में डाली । उसे 'कामदेव का नवधनुष' की उपाधि से पुरस्कृत किया गया । माधवी नृत्योत्सव में पुरस्कार के साथ-साथ कोवलन का दिल भी जीतती है । उस दिन नृत्योत्सव का जादू सारे नगर पर छा जाता है। माधवी को रथ पर बिठाकर उसे नगरभर घुमाया जाता है, ।

उत्सव मनाया जाता है । इस प्रकार नागर ने नृत्योत्सव का वर्णन कर इनसे जुडे हुए लोगों की ईर्ष्याभरी बातें और उच्च - नीच भेद का वर्णन सुंदर ढ़ंग से किया है ।

1.2.12 इन्द्रोत्सव -

'सुहाग के नूपुर ' उपन्यास में नागर ने विवाहोत्सव, नृत्योत्सव और इन्द्रोत्सव इन तीनों उत्सवों का चित्रण उत्कृष्टता से किया है । महाराज कारिहर बलवन केवल उत्सवों के लिए ही नगर में पधारते थे । लेकिन इस साल इन्द्रोत्सव की रौनक कुछ और ही थी; क्योंकि कावेरीपट्टणम् चोलमंडल की राजधानी घोषित होने के कारण इन्द्रोत्सव में नगर को नववधु की तरह सजाया जा रहा था । इन्द्रोत्सव के वक्त दूर - दूर से कलाकार मंडली जैसे - जादूगर, नर्तक, सौदागर, छोटे - मोटे व्यापारी लोग पैसे जुटाने के उद्देश्य से आते थे । इसलिए अमीर व्यापारियों के साथ - साथ गरिबों के लिए भी इस उत्सव की ज्यादा ही अहमियत थी ।

महाराज की विजययात्रा चिरस्मरणीय करने के लिए अनेक पताकाओं से कावेरीपट्टणम् को सजाया गया है । सुसज्जित इन्द्रध्वज के पास काठ का एक विशाल कीर्तिस्तंभ प्रतीक रूप में बनाया जाता है । महाराजद्वारा कीर्तिस्तंभ का नमूना स्वीकृत करने पर पत्थर का कीर्तिस्तंभ स्थापित करने की परम्परा थी । ऊँचे मंच पर रेशमी वस्त्र से ढ़का हुआ राजसिंहासन बिठाया जाता जिस पर महाराज विराजमान होते थे ।इन्द्रोत्सव में आए सभी गुणीजन अपनी कलाओं का प्रदर्शन करते । योध्दा अस्त्र - शस्त्र से अपनी शक्ति को, तथा बल को प्रदर्शित करते थे । विव्दान लोगों की शास्त्रार्थ और ज्ञान की तथा महावीर मल्लों के बीच प्रतियोगिताएँ होती थी । मस्त बलि पशु - पक्षियों के बीच रोमांचकारी खेल होते थे । काष्ठकार, शिल्पी, वस्त्र बुननेवाले, जादूगर सभी कलाकार अपनी कलाओं का प्रदर्शन कर महाराज से सम्मान पाने के लिए ललायित होते थे ।

मुख्य मंडप और कीर्तिस्तंभ के चारों ओर काष्ठ की सुंदर शिल्प खचित चार दीवारी और गोपुरम् के सामने जनता की छोटी सी भीड़ खड़ी रहती । लोग खड़े रहकर इन उत्सवों का आनंद उठाते थे । सैनिकगण लोगों को अंदर न जाने के लिए सख्ती से पेश आते थे । इस तरह इन्द्रोत्सव कावेरीपट्टणम् में बहुत धूमधाम से मनाया जाता था । विवाहोत्सव, नृत्यात्सव तथा इन्द्रोन्सव में लोग खुशी से मिल जुलकर, उच्च - नीच सब भूलकर उत्सव जोर - शोर से मनाते थे । उत्सवों के कारण लोगों में सांस्कृतिक एकता के दर्शन होते है ।

प्रस्तुत उपन्यास में इंद्रोत्सव के समय समाज रीति - रिवाज, प्रथा - परम्परा, संस्कृति, धर्म निष्ठा आदि का यथार्थ रूपसे चित्रण किया गया है । जिससे तत्कालीन समाज का यथार्थ रूप सामने आता है ।

2. वर्गसंघर्ष -

भारतीय समाज के इतिहास में पुरातन काल की समाज व्यवस्था का जो रूप दिखाई देता है वह आज भी सामाजिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण लगता है । भारतीय समाज व्यवस्था ब्राह्मण , क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र इन चार वर्णों में विभाजित है । इसका प्रारंभिक रूप सामाजिक संतुलन के लिए उपयुक्त बना । सभी लोग अपने - अपने कार्यों को ठीक ढंग से करते थे । लेकिन बाद में इसका प्रमुख उद्देश्य नष्ट हुआ । स्वातंत्र्योत्तर युग में समाज की परम्परागत सरंचना में काफी परिवर्तन आया । औद्योगिकरण, नागरीकरण, बदलते सामाजिक मूल्य, शिक्षा आदि के कारण वर्णव्यवस्था में परिवर्तन आया । अब वर्णव्यवस्था के स्थान पर वर्गव्यवस्था महत्त्वपूर्ण बनी है । वर्ग संघर्ष का अर्थ है - एक वर्ग का दूसरे वर्ग के खिलाफ लड़ना, जिससे समाज में परिवर्तन लाया जा सकता है, उसे वर्ग संघर्ष कहते है । अमृतलाल नागर ने 'सुहाग के नूपुर ' उपन्यास में वर्ग व्यवस्था को आर्थिक और सामाजिक दृष्टियों से विभाजित किया है ।

2.1 आर्थिक दृष्टि से वर्गभेद -

इस दृष्टि से उच्च वर्ग के अंतर्गत सेठ, साहुकार, सामंत, महाजन, व्यापारी आदि लोग आते है । निम्न वर्ग के अंतर्गत देवदासी, वेश्या, दास-दासी, सभी धर्मों के पुजारी-पंडित, भिखारी, आदि लोंगा का चित्रण किया गया है ।

2.1.1 उच्च वर्गीय समाज -

भारतीय समाज में वर्ग भेद के वर्गीकरण में सर्वप्रथम स्थान उच्च वर्गीय समाज का आता है। समाज के इस शक्तिशाली वर्ग ने समाज के निम्न वर्ग को अधिकांश पीड़ित किया है, शोषण का केंद्र स्त्री रही है । यह वर्ग न केवल आर्थिक साधनों पर एकाधिकार प्राप्त करना चाहता है; बल्कि समाज पर भी स्वयं का नियंत्रण रखना चाहता है । विवेच्य उपन्यास में सेठ मानाइहन, मासात्तुथान, कोयलन, पान्सा, राजपुरुष, महादंडाधिकारी आदि सब इसके प्रतीक है । ये सभी लोग व्यापारिक दृष्टि से नगर पर प्रभुत्व प्राप्त करते है । अपनी संपत्ति का उपयोग अपनी कामाग्नि को बुझाने के लिए करते है । वेश्या के साथ संबंध रखने से उत्पन्न संतानों को वे कभी

समाज में अच्छा स्थान नहीं दे पाते । नाजायज संतानों को न चाहते हुए भी वेश्या जीवन जीने के लिए मजबूर किया जाता है ।

2.1.2 निम्न वर्गीय समाज -

प्रस्तुत उपन्यास में आर्थिक दृष्टि से हीन-दीन लोगों को निम्न वर्गीय समाज के रूप में चित्रित किया गया है । इसमें प्रमुख रूप से वेश्या और देवदासियों का चित्रण हुआ है, जो धन के बदले में अपने शरीर को बेचने के लिए बाध्य होती है । वेश्या सेठ, साहुकार, महाजन आदि उच्चवर्गीयों के साथ विलासरत रहती है । इसके बदले में खूब धन कमाती है । वह धन कमाने के लिए पुरुषों को माध्यम बनाकर प्रेम का अभिनय करती है । जब तक पुरुष उस पर धन लुटाता है, तब तक उसे प्यार के जाल में फँसाती है और धन समाप्त होने पर धक्के मार-मारकर कोठे से बाहर निकालती है ।

इस उपन्यास में चित्रित धर्मपंडित, बौध्द भिक्खु, अलवार आदि सब दक्षिणा के लालच में कोई भी काम करने के लिए तैयार होते है । उत्सवों पर सेठ, साहुकारों के दानधर्म से भिखारी अपना दारिद्रयदोष मिटाते है । इससे स्पष्ट होता है निम्न वर्गीय समाज कुछ भी करके धन कमाने के पिछे लगा हुआ है ।

2.2 सामाजिक दृष्टि से वर्गभेद (स्त्री) -

सामाजिक दृष्टि से उच्चकुलीन स्त्रियों के अंतर्गत आदर्श 'भारतीय नारी' 'कुलवधु ' को चित्रित किया गया है । तो निम्न वर्ग के अंतर्गत देवदासी और वेश्याओं का चित्रण किया है ।

2.2.1 उच्च वर्गीय स्त्री (कुलवधु) -

'सुहाग के नूपुर ' उपन्यास में नागर ने कन्नगी को कुलवधु के रूप में चित्रित किया है । कुलगौरव को बढ़ाने के लिए सेठ मासात्तुवान ने सेठ मानइहन की बेटी को अपनी बहु के रूप में स्वीकार किया है । विवाह के पश्चात कन्नगी को सुहाग के नूपुर और हवेली के मुख्य कोषागार की चाबियाँ देकर श्वसुर ने बहु को कुलवधु के अधिकार सौंपे ।अपने पति की दासी बनकर वह माधवी के कोठे पर अपमानित की जाती है, तब श्वसुरद्वारा पूछने पर पति के कुकर्मों पर पर्दा डालकर कुल के मान की रक्षा करती है । कोवलन उसे मार पीटकर घर से बाहर निकालता है, तब वह कुलगौरव का ध्यान रखकर श्वसुरद्वारा बनाई गई धर्मशाला में जाकर रहती है । लेकिन पिता के घर बुलाने पर वह उन्हें अपनी सारी संपत्ति दान कर संन्यास लेने के लिए अनुमति देती है । समुद्रतट पर मार खाकर कोवलन को चेलम्मा धर्मशाला में लाती

है, तब कन्नगी पति की सेवा - सुश्रुषा करती है । वेश्या माधवी जब अपनी बेटी के साथ कोवलन की हवेली में रहने आती है ,तब कन्नगी उनकी सेवा में लगती है । अपने आभूषण एक-एक बेचकर घर चलाती है । लेकिन आर्थिक परेशानी को अपने पति से छिपाकर रखना ही कुललक्ष्मी का कर्तव्य मानती है । कोवलन के पास अंत में कुछ धन नहीं बचता, तब नूपुर बेचकर नया व्यापार शुरू करने की प्रेरणा देती है । मदुरा में जब कोवलन को चोर ठहराकर प्राणदण्ड देना तय होता है, तब वह चंडिका के रूप में पूरे साम्राज्य को ललकारती है । अपने पति को निर्दोष सिध्द कर उसे जीवनदान दिलवाती है । कन्नगी के रूप में एक पतिव्रता पत्नी के दर्शन होत है । जो पति के बुरे कर्मों को माफ कर अंत में उसे अच्छाई के मार्ग पर चलने को प्रेरित करती है । सुख दुःख मे पति का साथ देती है । अपमान सहती है, किंतु माधवी कों सुहाग के नूपुर नहीं देती लेकिन पति पर सब कुछ न्यौछावर कर पतिव्रता कुलवधु का धर्म निभाता है । कुललक्ष्मी का प्रमुख गुण नागर ने अपने उपन्यास द्वारा स्पष्ट किया है।

2.2.2 निम्नवर्गीय स्त्री (नगरवधु) -

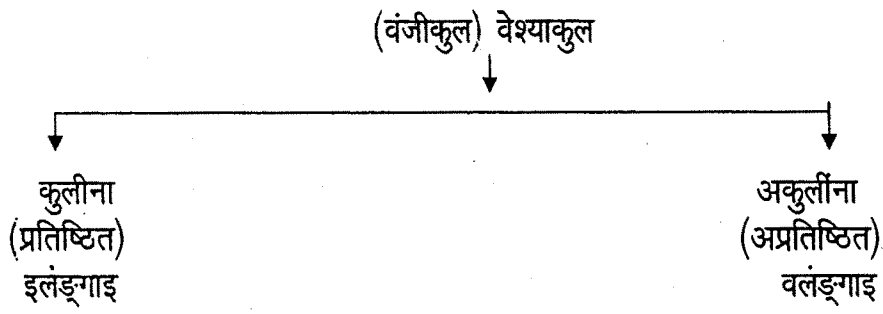

विवेच्य उपन्यास में वेश्या और देवदासियों को निम्न वर्ग के अंतर्गत रखा है । वेश्याओं में भी कुलीना - अकुलीना, प्रतिष्ठित - अप्रतिष्ठित वर्गों का चित्रण हुआ हैं । प्रमुखतः इलंङ्.गाइ और वलंङ्.गाइ इन दो वर्गों में वेश्या वर्ग बँटा था । राजम्मा को प्रतिष्ठित वंजिकुल की वेश्या मानी जाती थी । तो पेरियनायकी अप्रतिष्ठित वेश्या वर्ग की मानी जाती थी । इन वेश्याओं को उच्च वर्गीय पुरुष अपनी विलासिता पूर्ण करने के लिए इस्तेमाल करते है । इन पर धन लुटाते है । वेश्याएँ भी अपनी जवानी में जितना धन जुटा पाती है उतना जुटाती है । प्रम का झूठा नाटक कर धनी प्रेमी से धन कमाती है । बूढ़ापे में किसी छोटी बच्ची को मोल देकर खरीदती है और उन्हे वेश्या के लिए आवश्यक सभी गुणों में पारंगत करती है । ये भी कुलवधु बनने के लिए ललायित होती है, लेकिन समाज उन्हें वेश्या बनाकर ही छोड़ता है । चेलम्मा के रूप में नागर ने यह दिखाया है कि, जवानी में तो हर कोई धनी युवक चेलम्मा के प्रेम की याचना करता है,

लेकिन उसके बुढ़ापे में रोगग्रस्त हो जाने पर उसका स्पर्श करना भी पाप समझा जाता है । यही वेश्याओं के जीवन की शोकांतिका है । धर्म की आड़ लेकर देवदासियों को भी मंदिर का पुजारी भोगता है । एक प्रकार से वह भी मंदिर में वेश्या जीवन ही व्यतीत करती है । फिर भी देवदासियों को समाज में आदर -सम्मान मिलता है । उन्हें भी 'दत्ता' और 'हृता' इन दो वर्गों में बाँटा गया है। छोटी उम्र में लड़की को अपनी मर्जी से मंदिर में भेंट स्वरूप अर्पित किया जाता है या होती है, उन्हें 'दत्ता' वर्ग की देवदायियों के अंतर्गत रखा गया है । देवदासियों में यह प्रतिष्ठित वर्ग माना जाता है । 'हृत्ता' वर्ग में कहीं से भगाई गई लड़कियों को शामिल किया जाता है। उपन्यास में महादंडाधिकारी की हवस का शिकार बननेवाली महाजनी लड़की को देवदासी बनने पर मजबूर होना पड़ता है । जब वह 'दत्ता' वर्ग में शामिल होना चाहती है, तब उस वर्ग की प्रतिष्ठित देवदासियाँ आंदोलन कर उसे 'हृता' वर्ग में सम्मिलीत करती है। इस प्रकार इनके वर्ग भेद द्वारा उच्च-नीच भेद दिखाया है । देवदासियों को मंदिर का पुजारी उनके बुढ़ापे मे मंदिर से निकालता है या बेच देता है । कुछ देवदासियाँ उसी मंदिर की सीढ़ियों पर भिखारन बनकर अपना जीवन व्यतीत करती है । वेश्याओं और देवदासियों के रूप में नारी जाति का करुण क्रंदन सुनाई देता है ।

3. **आर्थिक समस्या_-**

प्रत्येक युग का साहित्यकार अपने युग की विचारप्रणालियों तथा विभिन्न परिस्थितियों के कारण समाज में निर्माण होनेवाली विभिन्न समस्याओं की अभिव्यक्ती के लिए साहित्य -सृजन करता है । हिंदी उपन्यासकारों ने सदियों से आर्थिक वैषम्य ग्रसित भारतीय जनता का आक्रोश अपने उपन्यासों के माध्यम से चित्रित किया है । नागर ने अपने उपन्यासों के माध्यम से आर्थिक वैषम्य तथा आर्थिक समस्याओं का यथार्थ चित्रण कर आर्थिक समानता की उच्चाकांक्षा प्रकट की है । अर्थ जीवन का महत्त्वपूर्ण अंग है और वैषम्य के कारण ही अनेक समस्याएँ निर्माण होती है । समाज में जीने के लिए पैसा तो महत्त्वपूर्ण है इसीलिए , " समाज और व्यक्ति के जीवन से अर्थ निकाल दीजिए समुचा ढाँचा ही धाराशायी हो जाएगा ।" [9]

प्रस्तुत उपन्यास में आर्थिक दृष्टि से अलग - अलग वर्गों का चित्रण हुआ है । इनमें पूँजीपति वर्ग और सर्वहारा वर्ग स्पष्ट दिखाई देता है । धनवान व्यापारी वर्ग जिन्हें किसी प्रकार की समस्या निर्माण नहीं होती, किंतु समाज का सामान्य वर्ग विशेष रूप से इस उपन्यास का महत्वपूर्ण अंश'वेश्यावर्ग' नित्य ही आर्थिक समस्या से जूझता है । प्रस्तुत उपन्यास में नागर ने

चेलम्मा, पान्सा, कोवलन और कन्नगी आदि पात्रों द्वारा उनकी आर्थिक समस्याओं का चित्रण किया है ।

3-1 वेश्या वर्ग की आर्थिक समस्या -

वेश्याएँ जवानी में धनी युवकों को प्रेमजाल में फाँसकर उनसे बहुत धन कमाती है । लेकिन बुढ़ापे में उन्हें आर्थिक समस्या का सामना करना पडता है । चेलम्मा और पेरियनायकी इन वेश्याओं के जरिए उनकी आर्थिक समस्या को स्पष्ट किया है -

3.1.1 चेलम्मा और पेरियनायकी -

नागर ने सर्वप्रथम वेश्या चेलम्मा को आर्थिक समस्या से जुझते हुए दिखाया है । अनिंदय सुंदरी, रूपगर्विता चेलम्मा अपनी जवानी में 'कामदेव का नवधनुष' उपाधि से गौरवान्वित हुई थी । अपने यौवनकाल में उसने भारतीय तथा अरब व्यापारियों से खूब धन कमाया था । बड़ी-बड़ी हवेलियों में रहना तथा विदेश यात्रा करना उसका शौक था । लेकिन उसका सारा धन-वैभव उसका प्रेमी हर ले गया । इस कारण बुढ़ापे में अर्थाभाव के कारण उसका जीना दुर्भर हो जाता है । श्वेतकुष्ठ से रोगग्रस्त होने पर उसकी देखभाल तथा इलाज के लिए भी पैसे नहीं बचते । शराब पिना, गालियाँ देना उसकी आदत बनती है । लेकिन पेरियनायकी चेलम्मा द्वारा माधवी को नृत्य सीखने के बाद अपना काम खत्म होने पर चालाकी से उसे बाहर निकालती है । माधवी पूछती है कहाँ जाओगी ? वह कहती है -" पुहारेश्वरम् के मंदिर के बाहर अनेक ऐसी भिखारनें भी बैठती हैं जो पहले वहाँ की देवदासियाँ थी । मैं देवदासी नहीं, वरन् महाजनदासी रही हूँ , इसलिए महाजनी टोले का चौराहा मेरे लिए अत्युत्तम है ।" [10]

पेरियनायकी को स्वार्थी, दंभी वेश्या के रूप में चित्रित किया गया है । उसके सामने आर्थिक समस्या तो नहीं है, क्योंकि उसने अपने बुढ़ापे का आधार पाने के लिए माधवी को खरीद लिया था उसने अपने प्रेमी से बहुत धन कमाया है । इस प्रकार नागर ने वेश्या चेलम्मा की दयनीय स्थिति का चित्रण कर वेश्याओं और देवदासिंयो के बुढ़ापे में अर्थाभाव् के कारण भिखारी बनने की वास्तविकता पर प्रकाश डाला है ।

3.2 दुराचार के कारण निर्माण हुई आर्थिक समस्या -

बुरे कर्मों का फल बुरा ही होता है । दुराचारी व्यक्तियों को अंत में ईश्वर दंड देता है और उनकी हालत भिखारियों जैसी बनाता है । यह पान्सा और कोवलन इन पात्रोंद्वारा चित्रित किया गया है ।

3.2.1 पान्सा -

रोमन व्यापारी पान्सा सेठ भी नगर में धनाढ्य व्यापारियों में से एक था । मानाइहन की चालों से और कोवलन की सफल व्यापारिक विदेश यात्रा से पान्सा का व्यापारिक प्रभाव नष्ट होता है। पान्सा के जलसार्थ मानाइहन के गुप्तहेरों से लुटे जात है । वह निर्धन हो जाता है । एक समय नगर के व्यापारिक कोठियों पर अपना राज उपभोगनेवाले पान्सा पर बचा खुचा बेचकर नगर छोड़ने की नौबत आती है । तब उसकी प्रेमिका पेरियनायकी अर्थाभाव के कारण उसका साथ नहीं देती, जो कि उसने सारा धन पान्सा से ही कमाया था । कुछ दिनों बाद पान्सा नगर में वापस लौटकर मासात्तुवान के कारोबार पर कब्जा कर अन्य लोगों को रिश्वत देकर अपनी ओर करता है । महाराज को जब नगर के आर्थिक कुचक्र का पता चलता है, तब उनके कहने पर मानाइहन गुप्तहेर भेजकर पान्सा की हत्या करवाते है ।

3.2.2 कोवलन :-

उत्तर-दक्षिण के सर्वश्रेष्ठ धनी व्यापारी सेठ मासात्तुवान के इकलौते पुत्र कोवलन ने शुरू में व्यापार में बहुत धन कमाया था । लेकिन वेश्या माधवी के प्रेमजाल में फँसकर तथा व्यापार में ध्यान न देने से वह सबकुछ गँवाता है । धनी श्रेष्ठिपुत्र दाने - दाने का मोहताज होता है । भूखा -प्यासा कोवलन समुद्रतट पड़ा रहता है । कोवलन की दयनीय अवस्था देख लोगों के मुख से उद्‌गार फूटते है कि, " क्या समय था और क्या हो गया ! भाग्य का दोष है भाई ! नहीं तो आरंभ में कोवलन चेट्टियार ने अपने अपने पिता और श्वसुर से क्या कुछ कम चमत्कार दिखलाया था । यह कहो कि नागिन ने डस लिया ! " [11] कोवलन को बेसुध अवस्था में चलम्मा धर्मशाला में कन्नगी के पास लाती है । कन्नगी के पास दिया जलाने के लिए तेल भी नहीं था । वह आभूषण बेचकर कोवलन का इलाज करवाती है । कोवलन के कारण वह भी आर्थिक समस्या से जूझ रही है । नया व्यापार शुरू करने के लिए वह कोवलन को नूपुर बेचने के लिए देती है । भिखारी जैसी अवस्था में कोवलन जब नूपुर बेचने जाता है, तो उसे चोर ठहरकर प्राणदण्ड देने की घोषणा की जाती है । नागर ने यहाँ पर यह दिखाने की कोशिश की है कि, समय बदलने पर उल्टी गिनती शुरू होती है । आर्थिक विपन्नता के कारण कोवलन के सौभाग्य और दुर्भाग्य के दोनों छोरों का चित्रण किया गया है ।

आर्थिक समस्या से ग्रसित व्यक्तियों पर समाज का उच्चवर्ग किस तरह अन्याय करता है, इसका -हृदयद्रावी चित्रण नागर ने किया है । पैसे के बलबुते पर ही समाज में इज्जत होती है ।

इसी चेट्टिपुत्र कोवलन को पहले चोर ठहराने की हिम्मत कोई न करता था । कोवलन जैसे धनी, बुद्धिमान लड़के को अंत में ऐसी आर्थिक समस्या का सामना करना पड़ेगा, यह हम सोच भी नहीं सकते । आर्थिक समस्या इतनी गहरी है कि, लोग इसमें घुट-घुटकर मर जाते है । अतृप्ति, धनाभाव और कुंठा से घिरे हुए युवक का चित्रण यथार्थ रूप में किया गया है । आर्थिक वैषम्य के कुपरिणामों को पाठकों के सामने प्रस्तुत कर नागर ने अपने उपन्यास के उद्देश्यों में सफलता पायी हैं ।

4 धार्मिक वातावरण -

समाज जीवन पर धर्म का गहरा प्रभाव रहता है । धर्म से ही लोग संकट के समय नैतिक बल प्राप्त करते है । ईश्वर में उनकी अटूट आस्था है । हमारे देश में कई धर्मों के लोग रहते है । डॉ.अम्बेडकर के अनुसार " धर्म प्रत्येक व्यक्ति के लिए अनिवार्य है । धर्म की उपेक्षा करना सजीव संवेदनाओं की उपेक्षा करना है । उनके अनुसार धर्म एक व्यवस्था तथा शक्ति है । धर्म का साम्राज्य भले ही खत्म हो गया हो, परंतु आज भी सामाजिक चेतना के रूप में लागों के मस्तिष्क में मौजूद है ।" [12] 'सुहाग के नूपुर' उपन्यास में धार्मिक वातावरण का चित्रण हुआ है । लेकिन धर्म के नाम पर लड़ाई न दिखाकर नागर ने अच्छे - बुरे वक्त में लोगों की भगवान के प्रति आस्था का चित्रण कर सर्वधर्मसमभाव की भावना को अहमियत दी गई हैं ।

कोवलन का ब्राह्म मुहूर्त में नगर प्रवेश, उसके आगमन पर स्वास्तिवाचन, मंगलवादन तथा धर्मपंडितों का आशीर्वाद लेना - आदि धारणाओं द्वारा लेखक ने तत्कालीन धार्मिक परिस्थिति को उपस्थित किया है । स्नानोपंरात गंगापूजन, दानधर्म भारतीय धर्म परम्परा का अनुकरण ही है । विदेश यात्रा के समय धर्मगुरूओं का मंत्रोद्वारा आशीर्वाद देना, नदी पूजाद्वारा गंगा को संतुष्ट कराना तथा युरोपीय देशों के धार्मिक वातावरण का चित्रण भी उपन्यास में आया है । कोवलन को चोरी के इल्जाम में बंदी बनाया जाता है, तब कन्नगी अपने पति को निर्दोष सिद्ध करने के लिए चंडिका बन मदुरा साम्राज्य को ललकारती है । तब " मदुरा नगर में हवा उड़ गई कि महारानी का नूपुर चुराने के अपराध में जिस व्यक्ति को पकड़ा गया था, उसकी रक्षा करने के लिए स्वयं मीनाक्षी देवी प्रकट हो गई है ।" [13] यहाँ पर लागें का धार्मिक अंधविश्वास दिखाई देता है ।

रोगग्रस्त वेश्या चेलम्मा जब तीर्थयात्रा हेतु उत्तर भारत, कांची, काशी पहुँचकर गंगा के तटपर ईश्वर का जप कर सच्चे मन से आराधना करती है, संन्यासी तथा अन्य लोगों की

निष्काम भाव से सेवा करती है । तब संन्यासी उसे औषधि तथा मंत्रजाप से रोगमुक्त करता है । कभी भी ठीक न होनेवाले रोग से मुक्त होने पर चेलम्मा सोचती है भगवान की आराधना से सबकुछ ठीक हो सकता है । भगवद्भक्ति में लीन होकर अंतरंग की गहराई से फल की अपेक्षा न कर कर्म करते रहने से ही भगवान प्रसन्न होते है । इस प्रकार धार्मिक वातावरण जहाँ-तहाँ रेखांकित करने में नागर सिद्धहस्त हुए है ।

नागर ने वेश्या माधवी को भी भगवान की ओर उन्मुख होते दिखाया है । कोवलन के विदेशयात्रा जानेपर वह सकुशल नगर लौटे, इसलिए माधवी मणिमेखला देवी का पूजन कराकर, प्रियजनों को भोज कराकर, उत्सव मनाती है । नगर में जब वेश्याओं के खिलाफ नैतिक आंदोलन होता है , तब माधवी धर्म का आधार लेती है । अपने कोठे पर धार्मिक उत्सव, प्रवचन, कीर्तन और सात्विक भावोंवाले नृत्य करवाती है । नगर की सभी वेश्याएँ इस धार्मिक आडम्बर में माधवी का साथ देती है । सभी ब्राह्मण, श्रावक, आतवार, धर्मपंडित दक्षिणा के लालच में वेश्याओं के धर्माडम्बर में साथ देते है । माधवी यह सब वह महाराज द्वारा दिए जानेवाले दंड से बचने के लिए करती है ।" भारतीय समाज धार्मिक रूढ़ियों से आक्रांत है । हमारे समाज में अगणित धर्म संबंधी मान्यताएँ है । विभिन्न धर्मों की महत्ता में विश्वास किया जाता है । किंतु क्या यह धर्म-बद्धता मानवीय विकास की द्योतक है ।" [14]

विवेच्य उपन्यास में नागर ने अपने पात्रों को देवी - देवताओं के हजार-दो हजार वर्ष पूर्व के प्राचीन मंदिरों के भव्य दर्शन कराए है । यहाँ तक कि रोमन व्यापारी पान्सा ने देवी -देवताओं की भव्य मूर्तियों से उद्यान को सजाकर अपनी धार्मिक वृत्ति को दिखाया है । यहाँ पर धर्म का मतलब किसी ईश्वरीय मत से नहीं बल्कि व्यक्ति के कार्यों को नियंत्रित करने के उद्देश्य से है । इस प्रकार नागर के उपन्यास में तत्कालीन धार्मिक स्थिति का चित्रण हुआ है । धार्मिक मूल्यों के उदान्त तत्व पर विश्वास प्रकट करके उसकी प्रशंसा की गई है, तो दूसरी ओर धार्मिक आडम्बर धर्म के कारण निर्माण होनेवाली जातिगत संकीर्णता का विरोध किया है । नागर ने प्रस्तुत उपन्यासद्वारा भारतीय धार्मिक मनोवृत्ती का व्यापक चित्रण हमारी आँखों के सामने प्रस्तुत किया है ।

तत्कालीन समाज में रहनेवाली अंधश्रध्दा का भी चित्रण इस उपन्यास में आया है - विशेषतः देवदासी प्रथा । धर्म के नाम पर मासूम लड़कियों को अपना जीवन अर्पण करना और पुजारी द्वारा वासनापूर्ति करना आदि घटनाओं द्वारा समाज में व्याप्त अंधश्रध्दा स्पष्ट

दिखाई देती है । इस उपन्यास में देवदासी रुद्रमाल को उत्सवों, समारोह में महाराज के बाई ओर विराजने का स्थान देकर नागर ने देवदासियों को प्रतिष्ठा दिलाई है । तो बुढ़ापे में उन्हें उसी मंदिर की सिढ़ियों पर भिखारन बनाने की प्रवृत्ती का पर्दाफाश किया है ।

5. राजनीतिक वातावरण -

वर्तमान युग में हर क्षेत्र में राजनीतिक दाँवपेचों का अवलंबन किया जाता है । समाज के निर्माण में व्यक्ति के उत्थान - पतन में राजनीति का महत्त्वपूर्ण योगदान होता है । युगीन राजनीति का मानव जीवन के पहलुओं पर प्रभाव पड़ता है । स्वातंत्र्योत्तर काल में भारत राजनीतिक घटनाओं से विशेष रूप से प्रभावित एवं आंदोलित हुआ है । चण्डीप्रसाद जोशी ने अपने शोधप्रबंध में इस युग के उपन्यासकारों के बारे में लिखा है कि, " इस युग के उपन्यासों में साम्राज्यवादी नीतियों का विवेचन कहीं भी नहीं मिलता । राजनीतिक संघर्षों के चित्रण में कोई भी पात्र साम्राज्यवाद के प्रतीक रूप में चित्रित नहीं किया गया । भारतीय नौकरशाही की मनोवृत्तियों को उद्घाटित करने के लिये किसी भी अफसर का उल्लेख नहीं मिलता । राजनीतिक गतिविधियों के चित्रण तथा संघर्ष चित्रित करने की स्थिति में ऐसे पात्रों का विश्लेषण करना आवश्यक होता है ।" [15] प्रस्तुत उपन्यास में कावेरीपट्टणम् की राजनीति तथा व्यापारिक दाँवपेंचों का चित्रण किया गया है ।

कोवलन के विवाहोत्सव पर देश - विदेश के व्यापारी अलग - अलग गुट बनाकर आपस में राजनीतिक दाँवपेंचों से एक-दूसरे पर व्यंग्य करते है । उनकी राजनीति व्यापारिक उतार - चढ़ाव पर अवंलबित होने के कारण एक-दूसरे को अपमानित करने का मौका कोई भी छोड़ना नहीं चाहता। रोमन दलाल क्लॉडियस ने पापनाशन से कहा " ईजिप्शियन से अधिक घुल-मिलकर न बैठो सेठ ! यह जादूगर है, तुम्हें नील का मच्छर बनाकर खा जाएगा ।" [16] भारत और रोम के बीच घनिष्ठ व्यापारिक संबंध थे । रोम सम्राट ने पांड्य और चेरन राजदरबारों के साथ राजनीतिक संबंध बढ़ाने के लिए पान्सा सेठ को प्रतिनिधित्व सौंपा था। अन्य विदेशी व्यापारियों को धमकी दी थी कि, कोई रोम साम्राज्य के व्यापर में बाधा डालेगा, तो उनके देश पर इसका बहुत बुरा असर पड़ेगा । पान्सा ने अनेक प्रमुख व्यक्तियों को रिश्वत देकर अपनी ओर कर लिया था । मासात्तुवान की मृत्यु के बाद नगर का सारा कारोबार तथा सत्ता खुद के हाथों में लेकर पान्सा वेश्याओं द्वारा राजनीतिक दाँवपेंच चलाता है । राज्याधिकारियों को अपने वश में करके पान्सा महाराज बलवन को प्रभावित कर अपनी प्रतिष्ठा स्थापित करना चाहता है । इसलिए

मानाइहन तथा नगर के अन्य चेट्टिगण जब पान्सा का एकसत्ताधिकार नष्ट करने के उद्देश्य से महाराज से मिलने उरैयुर जाते है, तब पान्सा उन्हें मारने के लिए गुप्तचरों को भेजता है । लेकिन उसे सफलता नहीं मिलती । महाराज को इन बातों का पता चलने पर वे चौंक उठते है । क्यों कि बरसों युध्दरत होने से उन्होंने कभी सोचा ही नहीं था , कि उनके राज्य में गहरा राजनीतिक कुचक्र काम कर रहा है । पान्सा ने राज्याधिकारियों द्वारा महाराज की सेवा में बहुमूल्य उपहार भेजने से उसकी कुटिल-नीति को महाराज पहचान नहीं सके थे । लेकिन अब बहुत देर हो गई थी, क्योंकि देश-विदेशों में कावेरीपट्टणम् की व्यापरिक साख गिर गई थी । चारों ओर अनियंत्रण और अव्यवस्था फैल गई थी । पान्सा की कुटिल नीतियों से तंग आकर मानाइहन सेठ गुप्तचरों को भेज उसकी हत्या करवाते है ।

विवेच्य उपन्यास में व्यापरिक दाँव-पेंचों से राजनीती में आए परिवर्तन को दिखाया है । कोवलन व्यापार के लिए सिकंदरिया मिस्र में जाकर सिकंदस से मिलकर व्यापारिक बातचीत करता है । सिकंदस उसी वक्त कहता है, " रोम का कोई भी प्रमुख व्यापारी सिकंदरिया के तीन-चार प्रमुख व्यापारियों की इच्छा के विरुध्द नहीं जा सकता । " [17] इससे स्पष्ट है कि, मिस्त्र में उसके खिलाफ जाने की किसी में हिम्मत नहीं है । लेकिन कोवलन चतुर बनिए कि भाँति अन्य व्यापारियों से मिलकर पूछताछ करता है । बाद में सिकंदररिया में अपना माल बेच ऊँचा लाभ उठाकर स्वदेश लौटता है, तो उसे चक्रवर्ती सम्राटों की तरह इज्जत प्राप्त होती है ।

कोवलन और वेश्या माधवी के प्रेम - विलास की बातें पता चलते ही सेठ मासात्तुवान और मानाइहन माधवी को नगर से बाहर निकालने के लिए नैतिक आंदोलन चलाते है । तो माधवी से ईर्ष्या करनेवाली सभी वेश्याएँ इसमें शामिल होती है । माधवी कोवलन की हवेली में आकर उससे शादी करती है, तब नगर के वृद्धजन कन्नगी की मानरक्षा के लिए पंचायत बुलाते है । पंचायत का फैसला कोवलन नहीं मानता, तब पंचायत के लोग महाराज से न्याय माँगने की बात कहते है । इससे नगर की खोखली राजनीति का चित्र स्पष्ट हो जाता ।

महाराज कारिहर बलवन साल में केवल दो बार ही इंद्रोत्सव और नृत्योत्सव में पधारते थे । इस कारण नगर के महादंडाधिकारी और राज्याधिकारी गलत कामों में व्यस्त थे । महादंडानायक महाजन वर्ग की दो लड़कियों को अपनी विलासिता का शिकार बनाता है । तब उनमें से एक लड़की की हत्या की जाती है और दूसरी को देवदासी बनना पड़ता है । नगर की प्रतिष्ठित देवदासियाँ आंदोलन कर उसे अप्रतिष्ठित 'हृता' वर्ग में सम्मिलित करवाती है ।

महादंडनायक खुद अपराध से बचने के लिए मंदिर के पुजारी और प्रधान देवदासी के बारे में अफवाएँ फेलाता है । उसे अपने अपराधों पर बिल्कुल पछतावा नहीं है । उसे शासनव्यवस्था का भय नहीं लगता । यह सब देख मानाइहन सेठ गुप्तचरोंद्वारा सच्चाई का पता लगाकर महादंडनायक और उस लड़की को न्याय करने हेतु महाराज के सामने प्रस्तुत करते है । महाराज महादंडनायक को उचित दंड देकर नगर के अन्य राज्याधिकारियों को चेतावनी देते है ।

अंत में नागर ने मदुरा साम्राज्य की भ्रष्ट राजनीति की पोल खोली है । कोवलन जब भिखारी जैसे अवस्था में नूपुर बेचने जाता है । तो स्वर्णकार कुप्पुस्वामी उस पर चोरी का इल्ज़ाम लगाता है । कोवलन को बंदी बनाकर उस पर कोड़े बरसाकर चौराहे-चौराहे पर भटकाया जाता है । लेकिन वास्तविक रूप से महारानी के नूपुर स्वर्णकार कुप्पुस्वामी और कुछ राज्याधिकारियों ने मिलकर उन्हें गलाकर और बेचकर खाए है ।महारानी ने घोषणा की कि, नूपुर चोर नहीं पकड़ा गया तो सभी राज्याधिकारियों को सूली दी जाएगी । इससे घबराकर कुप्पुस्वामी ने कोवलन पर इल्जाम लगाया । तब कन्नगी अपने पति को निर्दोष सिध्द करने हेतु आवेश में आकर कहती है, " छोड़ दो मेरे पति को ! छोड़ दो ! वे चोर नहीं है । पांड्य राजा के यहाँ अन्याय हो रहा है । निर्दोष को चोर कहकर उसे सूली दी जा रही है । ऐसे अन्यायी राजा का शीघ्र ही अंत होगा । उसकी रानी के पैरों के सुहाग के नूपुर सदा के लिए उतर जाएँगे ।" [18] यह सुनकर लोग उसे चोल महाराज के दरबार में पेश करते है , तब कन्नगी चोल महाराज को याद दिलाती है कि, एक बार गाय के बछड़े को रथ से कुचलनेवाले अपने बेटे को मृत्युदंड देकर आपने गाय के प्रति न्याय किया था । बाद में अपने दूसरे पैरों के नूपुर प्रमाण के रूप में दिखाकर अपने पति को निर्दोष बताती है । यह सब देखकर महाराज कोवलन को निर्दोष कहकर पाँच लक्ष मुद्रा तोहफे में देते है और अपने राज्याधिकारियों और कुप्पुस्वामी को उचित दंड देते है ।

इस प्रकार नागर ने 'सुहाग के नूपुर ' उपन्यास में भ्रष्ट राजनीति पर प्रकाश डाला है । उपन्यास में स्थित राजनीति से यह स्पष्ट करने की कोशिश की है कि, जिस नगर की आर्थिक तथा राजनीतिक स्थिति हीन-दीन हो उसमें उच्च सामाजिक की आशा नहीं की जा सकती ।

6 आत्मिक प्रेम संबंध :-

'सुहाग के नूपुर ' उपन्यास में नागर ने कोवलन -माधवी, कोवलन - कन्नगी, चेलम्मा - भारतीय प्रेमी, पेरियनायकी - पान्सा तथा पिता - पुत्री, पिता - पुत्र, माता - पुत्री आदि रिश्तों - नातों के जरिए आत्मिक प्रेमसंबंध दिखाने कोशिश की है ।

6.1 कोवलन - माधवी -

नृत्योत्सव में माधवी पुरस्कार के साथ कोवलन को भी जीतती है । दोनों एक-दूसरे के प्रेम में बँध जाते है । कोवलन -कन्नगी के विवाह तय होनपर माधवी कोवलन को तीखे व्यंग्यबाणों से घायल करती है । कोवलन कहता है, "तुम्हारे प्रेमधन को पाने के लिए मैं सदा तुम्हारे द्वार का भिखारी बना रहूँगा माधवी ! मैं तुम्हारे आकर्षण से विवश हूँ , अपने-आपसे विवश हूँ ।"[19] कोवलन माधवी को दिए वचन को निभाता है । विवाह के पश्चात भी वह माधवी से प्रेम संबंध बनाए रखता है । कोवलन जब माधवी छोड़कर जाता है तो शृंगारशून्य विरहेवेश धारणकर मणिमेखला देवी से वह उसकी कुशलता के लिए आन माँगती है । वह कोवलन की पुत्री की माँ बनती है । परिणामतः सारी दुनिया को भूलकर कोवलन माधवी के साथ सात भाँवरे लेता है । अंत में माधवी उसे छोड़कर जाती है और प्राकृतिक आपदा के कारण नगर ध्वस्त होता है, तब भी कोवलन अन्य लोगों से माधवीऔर मणिमेखला की खुशहाली पूछता है ।इस प्रकार दोनों एक दूसरे के आत्मिक प्रेम में बँधे है । नागर ने माधवी के जहर खाने के प्रसंग से वेश्या के एकनिष्ठ प्रेम की तथा सती बनने की चाहत दिखाकर अनोखा प्रेम संबंध चित्रित किया है ।

6.2 कोवलन - कन्नगी -

सामाजिक प्रतिष्ठा और पिता के आग्रह के कारण कोवलन कन्नगी से विवाह करता है । "उन्होंने मान, विद्या और रूप और गुण की ओर से आँखे बंद करके कुलीनता को पकड़ा, इसे वह किसी भाँति न छोड़ सकते थे ।" [20] विवेच्य उपन्यास में कुलीनता को विशेष महत्त्व दिया गया है । पति के वेश्यागामी होने के बाद भी कन्नगी उसकी दासी बनकर निरंतर उसकी सेवा में जुट जाती है । यहाँ तक की माधवी और उसकी बेटी की सेवा कर प्यार भरा साथ निभाती है । वह कोवलन को दिखाना चाहती है कि विवाह केवल दो शरीरों का ही संबंध नहीं, बल्कि दो आत्माओं का मिलन है । कोवलन के साथ रहकर उसके अन्याय - अत्याचार सहती है , लेकिन अपने पति परमेश्वर से कुछ नहीं कहती । लेकिन अपने सुहाग के नूपुर माधवी को देने से साफ इन्कार करती है । मदुरा में कोवलन को चोर ठहराकर प्राणदंड दिया जाता है , तब वह सती - सावित्री की तरह पति के प्राण बचाती है । यह देख कोवलन कहता है, " तुम्हारे चरण छू लूँ सती ! आज के दिन के लिए मैं सात जन्मों तक भी तुमसे उऋण न हो सकूँगा ।" [21] इसप्रकार इन दोनों के आत्मिक प्रेमसंबंध को दिखाकर नागर यह सिध्द करना चाहते है कि, भारतीय सामाजिक जीवन में दाम्पत्य

संबंध या विवाह वासनापूर्ति प्रतीक न होकर जीवन का पवित्र बंधन, त्याग एवं समर्पण का चिन्ह है ।

6.3 पेरियनायकी - पान्सा -

पेरियनायकी और पान्सा का आत्मिक प्रेमसंबंध है । दोनों एक-दूसरे को तन- मन से चाहते है । वेश्या होकर भी पेरियनायकी पान्सा सेठ के साथ 20-21 वर्षों तक एक पुरुषव्रत निभाती है । अपने बुढ़ापे में भी पान्सा के सामने जाने पर नववधु की तरह शर्माकर उसे रिझाती है । पेरियनायकी और माधवी को जब नगर से बाहर निकालने के लिए आंदोलन होता है तब भी वह उसका साथ निभाता है । पेरियनायकी को पत्नी तथा माधवी को अपनी बेटी की तरह मानता है । इन दो प्रेमी युगुलों की मृत्यु भी एक साथ होती है ।

6.4 चेलम्मा - भारतीय प्रेमी -

अपने यौवनकाल में 'कामदेव का नवधनुष ' उपाधि से पुरस्कृत होनेवाली महासुंदरी, रूपगर्विता चेलम्मा के कई दिवाने थे । देश - विदेश के सेठ, महाजन लोग उसका प्यार पाने के लिए तरसते थे । लेकिन चेलम्मा एक भारतीय प्रेमी को चाहती है । वह उसे इतना प्यार करती है कि, उसका प्रेमी उसे मार-पीटकर, उसका धन छीनकर वेश्या नंदा को देता है, यह सब मालूम होने पर भी वह अपना सब कुछ उस पर लुटाती है । भिखारन और रोगग्रस्त होने पर भी वह उसे भूल नहीं पाती । वह कुललक्ष्मी की तरह जिंदगी गुजारना चाहती है, लेकिन सती बनने की चाहत उसके मन में ही रहती है । यही उसके जिंदगी का सबसे बड़ा गम है ।

6.5 पिता - पुत्र -

प्रस्तुत उपन्यास में नागर ने पिता और पुत्र का आत्मिक प्रेम संबंध दिखाया है । उपन्यास के प्रारंभ में ही सेठ मासात्तुवान अपने पुत्र के सफल व्यापारिक यात्रा से लौटने के कारण उसका स्वागत बड़े जोरों-शोरों से करते है । भावावेश की स्थिति में दोनों गले मिलते है । अपने इकलौते पुत्र का विवाह उच्च कुलोत्पन्न कन्नगी के साथ धूमधाम से करते है । विवाह समारोह का आयोजन इस प्रकार करते है कि लोग उसे कभी न भूले । अपने बेटे को शुभाशीर्वाद मिलें इसलिए दानधर्म करते है । लेकिन कोवलन जब वेश्या माधवी के प्रेमजाल में फँसा है , यह खबर जब वे सुनते है तो बहुत दुखी होते है । इसी गम के कारण बीमार पड़ते है और उनकी मृत्यु होती है ।

6.6 पिता - पुत्री -

सेठ मानाइहन अपनी पत्नी की मृत्यु के कारण कन्नगी को इतना प्यार देते है कि उसे कभी अपने माँ की कमी महसूस न हो । उसे पढ़ा - लिखाकर, अच्छे संस्कार कर उसका विवाह उच्च कुलोत्पन्न कोवलन के साथ धूमधाम से कराते है । वेश्या माधवी और कोवलन के प्रेम की बातें सुनकर वे अपने बेटी के भविष्य के बारे में चिंतित और व्याकुल हो उठते है । कोवलन की गलतियों को माफ कर उसे वेश्याओं के गुलदस्ते से उठाकर घर वापस कन्नगी के पास लाते है । वर्षों बाद पिता-पुत्री ने एक-दूसरे को देखा और उन दोनों की मीन-सी आँखे विवश होकर गल उठी । अपनी पुत्री की हालत देख उसकी आँखे पोंछकर कहने लगे, " दैव के आगे किसी का वश नहीं बेटी ! मनुष्य तो मात्र अपनी सीमा में ही देख सकता है । मैंने कब यह सोचा था ! अस्तु , जो हुआ सो हुआ । उसे भूल जाओ । अपने पति को सात्वंना दो । संभव है उससे तुम्हारा, मेरा और सारे नगर का कल्याण हो ।" [22] बेटी को सात्वंना और शुभाशीर्वाद देकर वे चले जाते है । लेकिन कोवलन फिर से माधवी के साथ रहकर कन्नगी को पीटता है, तो वह धर्मशाला में जाकर रहती है । जब मानाइहन को यह बात पता चलती है तो वे तड़प उठते है । अपने पुत्री की दयनीय अवस्था देखकर कहते है, " इतने आँसू भी नहीं बिटिया ! तू तो मेरा पुत्र है । तुझे इस कुल में पाकर अब हमारे पितृगण कभी तर्पण के प्यासे न रहेंगे ।" [23] पुत्री का दुख और उसकी कष्ट-साधना देख वे अपना सब कुछ राज्यकोष में दान कर संन्यास लेते है । एक भावविव्हल पिता का चित्रण हुआ है ।

6.7 माता - पुत्री -

माता और पुत्री के रूप में माधवी और उसकी बेटी मणिमेखला में आत्मिक प्रेमसंबंध दिखाया है । माधवी अपने वेश्या जीवन की छाया भी अपनी पुत्री पर पड़ने नहीं देती । वह अपनी पुत्री को पढ़ा-लिखाकर, कुलवधुओं के संस्कारों से उसे मंडित करना चाहती है । अपने पुत्री का विवाह उच्च कुलोत्पन्न खानदान में तय करने के लिए कोवलन के पिछे लगती है । लेकिन सामाजिक मान्याता न होने से वह निराश होती है । कोवलन के वंशवृक्षपट्ट पर अपने पुत्री का नाम लिखने के लिए कोवलन से झगड़ती है । तथा अपने अधिकारों के प्रति सचेत हो महाराज से न्याय माँगने के लिए भी तैयार है ।

पेरियनायकी और माधवी में भी माँ - बेटी का ही रिश्ता है । लेकिन माधवी के साथ उसका खून का रिश्ता न होकर, वह उसकी पोष्यपुत्री है । वह माधवी को प्यार से पढ़ा -

लिखाकर, संगीत और नृत्य की शिक्षा देती है । कोवलन के साथ प्यार में पड़कर माधवी की हालत भी चेलम्मा की तरह ना हो इसलिए वह जी-जान से माधवी को समझाती है ।

अमृतलाल नागर ने 'सुहाग के नूपुर ' उपन्यास में इन पात्रों के माध्यम से आत्मिक प्रेमसंबंधो का यथार्थ चित्रण किया है । वेश्याएँ भी सामान्य स्त्रियों की तरह एकपुरुषव्रत निभाने के लिए ललायित होती है इसका असाधारण उदाहरण प्रस्तुत किया है ।

7 टूटते हुए परिवारिक जीवन का चित्रण -

हिंदी उपन्यास साहित्य में संयुक्त परिवार के विघटन का चित्रण सहज में प्राप्त होता है । प्रेमचंदोत्तर उपन्यासों में संयुक्त परिवार प्रायः छिन्न-भिन्न हुए है । शायद इसी कारण संयुक्त परिवार का स्थान गौण हुआ है । परिवारिक टूटन आज के युग की प्रमुख समस्या है । पतिद्धारा व्यभिचार करने से , पति-पत्नी में तनाव निर्माण होने से , पति के सानिध्य में घुटन का निर्माण होने आदि के कारण विवाह संबंध टूट जाते है । " सम्बन्ध विच्छेद मनुष्य और समाज दोनों की दृष्टि से मानवीय समाधान खोज सकने में बड़ा योगदान निभाता है । मानवी स्वास्थ्य के लिए विवाह-सम्बन्ध विच्छेद का समर्थन किया जा रहा है । बीसवी सदी के हिंदी उपन्यासों में विवाह - विच्छेद का समर्थन करते हुए पति को शराबी, जुआरी, विकृत, परस्त्रीगामी दिखाया है ।" [24] नागर ने 'सुहाग के नूपुर' उपन्यास में प्रेम त्रिकोण के माध्यम से परिवारिक जीवन के बनते -बिगड़ते संबंधो का चित्रण प्रस्तुत किया है ।

7.1 परिवारिक टूटन -

कोवलन - कन्नगी - माधवी

पति - पत्नी के संसार में अगर कोई तिसरी व्यक्ति झाँकती है, जिससे उनके बीच का रिश्ता टूट जाता है, उसे परिवारिक टूटन कहते है ।

दो कुलों का वैभव मिलाकर सारे भारतवर्ष में कोवलन और कन्नगी की संतानें अद्वितीय गौरव प्राप्त करेंगी यह सोचकर सेठ मानाइहन और मासात्तुवान ने उनका विवाह तय किया । लेकिन विवाह के पूर्व ही कोवलन 'नृत्योत्सव' में वेश्या माधवी के प्रेमपाश में बँधता है । माधवी अपनी अदाओं से और नृत्य कौशल्य से कोवलन को रिझाती है । कोवलन माधवी पर अनेक उपहार और धन लुटाकर अपना प्रेमभाव व्यक्त करता है । लेकिन जब माधवी को कोवलन - कन्नगी के विवाह के बारें में पता चलता है, तो वह घायल सिंहनी की भाँति तड़पती है । उसकी हालत देख पेरियनायकी उसे समझाती है कि , वेश्या को धन कमाने के लिए पुरुष उसका माध्यम

और प्रेम व्यवसाय होता है । वेश्याओं की तकदीर में शौहर नहीं होते । वेश्या को केवल प्रेम का नाटक कर धन कमाना चाहिए । यह सुनकर माधवी कहती है, "प्रेम का नाटक ! , नहीं मैं कोवलन से स्त्री की तरह प्यार करती हूँ .... मैं मानवी हूँ, प्रेम का अधिकार नहीं छोड़ सकती ।" [25] वह वेश्या होकर भी कोवलन से एकपुरुषव्रत निभाकर उसकी पत्नी बनना चाहती है । उसे अपने प्यार पर पूर्ण विश्वास था । कोवलन जब उसे मिलने आता है तो विवाह के प्रश्नपर माधवी अपने व्यंग्यबाणों से उसे घायल करती है । अंत में कोवलन से वचन लेती है कि कन्नगी की सुहागरात पर तुम उसे मेरी और तुम्हारी दासी की तरह सेवा करने के लिए ले लाना । कोवलन माधवी को दिया वचन निभाता है ।

सप्तमी की तिथि पर दक्षिण भारत में सर्वश्रेष्ठ दो अतुल धनाधीशों की इकलौती संतानों का प्रणयबंधन समारोह धूमधाम से संपन्न होता है । कोवलन एक साथ दो स्त्रीयों के आकर्षणपाश में बध्द होता है । माधवी को दिए वचनानुरूप कन्नगी को सुहागरात पर माधवी के कोठे पर ले जाता है । माधवी कन्नगी को नीचा दिखाने के लिए ईर्ष्या और जलनभरी बातें करती है । लेकिन कन्नगी उसके सभी प्रश्नों के उत्तर शांत , सयंत भाव से देकर उसे पहली भेंट में परास्त करती है । पति के वेश्यागामी होने का पहली रात को पता चलते हुए भी वह कोवलन और माधवी का जरा सा भी तिरस्कार नहीं करती । यह सब देख कोवलन माधवी को तमाचा मारकर उसके घमंड को तोड़ता है । कन्नगी को लेकर घर वापस आकर कोवलन अपने किए का पछतावा कर उसकी क्षमायाचना करता है । कन्नगी अपने टूटते हुए परिवार को बचाने के लिए उसे तुरंत माफ करत देती है । श्वसुर मानाइहन के पास जाकर कोवलन माफी माँगता है । तब मानाइहन अपने बेटी के टूटते हुए ससार को बचाने के लिए कोवलन को एक कथा सूनाकर , वेश्याओं के खिलाफ नैतिक आंदोलन चलाते है । कोवलन माधवी को छोडकर व्यापार और कन्नगी की ओर ध्यान देने लगता है । कन्नगी भी अपने पति को रिझाती है, उसके साथ विदेशयात्रा करती है ।

कोवलन के ठुकराए जाने पर माधवी जहर खाती है । यह पता चलने पर कोवलन दौड़कर उसके पास जाता है । उसे दूर ले जाकर उपचार करवाकर उसकी सेवा करता है । उसी के साथ नगर में वापस आकर रहता है । माधवी कोवलन के पुत्री की माँ बनती है । संतान के मोहवश कोवलन कन्नगी से दूर माधवी में बँधता है । संतान प्राप्ति वैवाहिक जीवन का महत्त्वपूर्ण अंग है । कन्नगी यह सुख कोवलन को नहीं दे पाती इसलिए संतान की लालसा से वह माधवी में बँध

जाता है । कन्नगी के प्रति अन्याय होते देख फिर से कोवलन कन्नगी के पास वापस आकर सुखी जीवन बिताने का निश्चय करता है । तब नाटक साधकर माधवी कोवलन की हवेली में आकर रहती है । कोवलन के साथ सात भाँवरे लेकर कुललक्ष्मी के अधिकार कन्नगी से छीनती है । लेकिन कन्नगी सब कुछ देती है लेकिन सुहाग के नूपुर माधवी को नहीं देती । इस कारण कोवलन उसे मारकर घर से बाहर निकालता है । माधवी के कारण अपने परिवार को टूटते हुए देखकर कन्नगी विवश होकर रोती है । लेकिन अपनी जबान से सौतन के लिए एक भी तिरस्कृत तथा घृणाभरा शब्द नहीं निकालती । अपने कुल की लाज बचाने के उद्देश्य से धर्मशाला में रहती है । अपने दैव को दोष देकर सबकी कल्याणकामना करती है । लेकिन माधवी नूपुर न मिलनेपर कोवलन के घर से कोवलन को ही मार - पीटकर घर से निकालती है । राजपुरुष से संबंध बढ़ाकर कोवलन को भरी भीड़ में पीटवाती है । बेसुध अवस्था में कोवलन को धर्मशाला में लाया जाता है । अपने पति की हीन-दीन अवस्था देख कन्नगी उसकी सेवा में जुट जाती है । इस प्रकार टूटते हुए परिवार को बचाने का प्रयास वह हमेशा से ही करती है । लेकिन नियति उसके साथ अज़ीब सा खेल खेलती है । मदुरा में नूपुर चुराने के इल्ज़ाम में कोवलन को गिरफ्तार कर प्राणदंड दिया जाता है । तब कन्नगी अपना संसार ध्वस्त होते देख चंडिका बन पति को निर्दोष सिध्द कर अपने सुहाग को जीवनदान देकर अपने परिवार की रक्षा करती है।

'सुहाग के नूपूर' उपन्यास में नागर ने अपना उद्देश्य स्पष्ट किया है कि, पुरुष दो स्त्रियों से विवाह कर कभी सुखी नहीं रह सकता । वह किसी एक के प्रति भी न्याय नहीं कर सकता । कोवलन - कन्नगी के परिवार में वेश्या माधवी के कारण टूटते हुए परिवार का चित्रण हुआ है । वेश्या के कारण पति - पत्नी के रिश्ते में दरार उत्पन्न कर नागर ने इस वास्तविकता की ओर पाठकों का ध्यान आकर्षित किया है कि, वेश्या कभी किसी का भला नहीं कर सकती । नागर ने अंत में कोवलन और कन्नगी के टूटते हुए विवाह संबंध को जोडने का प्रयास किया है । अंत में कन्नगी के जीवन को सफलता की ओर बढ़ाकर सत्य की जीत दिखाई है ।

8. शीलभ्रष्ट व्यक्तियों का चित्रण -

विवेच्य उपन्यास में कई शीलभ्रष्ट व्यक्तियों का चित्रण हुआ है । प्रस्तुत उपन्यास में यह एक महत्त्वपूर्ण समस्या है । धनी - मानी दंभी सेठ, साहुकार, सांमत, महाजन आदि सभी लोग अपने कुलगौरव को भूलकर कामविलास में ही जीवन की सार्थकता मानते है । वेश्याओं के साथ अपनी काम - पिपासा को तृप्त करने के लिए उच्च वर्गीय पुरुष उन पर पैसे लुटाकर झूठ -

मूठ का प्यार हासिल करना चाहते है । वेश्याएँ धनी युवकों को तब तक अपने प्रेमजाल में बाँधकर रखती है , जब तक उनके पास धन-संपत्ति है । पैसे खत्म हो जाने पर वे उन्हें धक्के मार मार घर से बाहर निकालती है । विवेच्य उपन्यास में शीलभ्रष्ट व्यक्तियों में प्रमुख रूप से कोवलन, महादंडाधिकारी, पान्सा, राजपुरुष, महालिंगम और पापनाशन आदि लोगों का समावेश होता है -

8.1 कोवलन -

'नृत्योत्सव' में वेश्या माधवी का नृत्य कौशल्य देख कोवलन माधवी के प्रेमपाश में बँधता है । चोरी - छुपे कोवलन और माधवी पान्सा के उद्यानभवन में मिलते है । माधवी जादूभरे चुंबनों से कोवलन को अपनी ओर खींचती है । दोनों एक-दूसरे को रिझाने के लिए अपना पुरुषत्व और नारीत्व सौंपते है । लेकिन जब कोवलन-कन्नगी के विवाह तय होने की बात माधवी को पता चलती है तो वह तड़पती है । वह कोवलन को कहती है शादी के बाद भी तुम्हें मुझसे मिलने के लिए आना ही होगा । कोवलन व्याकुल होकर कहता है, "तुम्हारे प्रेमधन को पाने के लिए मैं सदा तुम्हारे द्वार का भिखारी बना रहूँगा माधवी ! मैं तुम्हारे आकर्षण से विवश हूँ, अपने - आपसे विवश हूँ ।" [26] कोवलन कन्नगी से विवाह कर दोनों के आकर्षण में बँधता है । माधवी के कारण वह कन्नगी को मार - पीटकर घर से निकालता है । वेश्या के साथ अनैतिक संबंध रखने से एक पुत्री का बाप भी बनता है । समाज का नियम तोडकर वेश्या के साथ शादी भी करता है । कभी कन्नगी तो कभी माधवी में बँधकर शीलभ्रष्ट होता ही जाता है ।कोवलन की भिखारी जैसी हालत दिखाकर शीलभ्रष्ट व्यक्तिंयो को तथा बुरे कर्मो को अंत में ईश्वर दंड देता है यह दिखाने की कोशिश नागर ने की है ।

8.2 महादंडाधिकारी -

महादंडाधिकारी को भी शीलभ्रष्ट व्यक्तियों के रुप में चित्रित किया है । उसे उपवन में वेश्यामंडली के साथ एकांत में विलासिता में मग्न दिखाया है । काम विलास में वह इतना मग्न था कि यात्रियों के दल से गलती से दो महाजन मंडली की लड़कियाँ वहाँ पर खो जाती है, तो वह उन्हें भी नहीं बक्षता । उन्हें भी वह अपनी हवस का शिकार बनाता है । लेकिन उन दोनों लड़कियों की जिंदगी तबाह हो जाती है । उसमें से एक की हत्या होती है और दूसरी को देवदासी बनना पड़ता है । महादंडाधिकारी जैसे शीलभ्रष्ट, विलासप्रिय व्यक्ति के कारण दो अच्छे इन्सानों कों इसका दंड भुगतना पड़ता है ।

8.3 पान्सा -

रोमन व्यापारी पान्सा सेठ उन सभी विदेशी व्यापारियों का प्रतिनिधित्व करता है , जो विलासप्रिय है । पान्सा वेश्या पेरियनायकी की के प्रेमाकर्षण में बध्द है । 20-21 सालों तक दोनों एक-दूसरे से मिलते रहते है । पान्सा जब कभी कावेरीपट्टणम् नगर आता तब वह पेरियनायकी के साथ रहता है । वेश्या होकर भी पेरियनायकी उससे एक पुरुषव्रत निभाती है ; लेकिन दोनों शादी के बंधन में नहीं बँधते । पान्सा नगर के अन्य युवकों को भी वेश्याओं के कोठों पर व्यापार के उद्देश्य से बुलाकर उन्हें वेश्यागामी बनाता है । तथा नगर का सारा व्यापार वेश्याओं द्वारा चलाता है । इस प्रकार शीलभ्रष्ट व्यक्तियों में वह अग्रणी है ।

8.4 राजपुरुष -

वेश्या माधवी के साथ संबंध बढ़ाकर वह अपनी विलासिता को माधवी के जरिए पूर्ण करता है । माधवी को एकपुरुषव्रत तोडने को बाध्य कर पैसों की थैली उसे देकर यह सब मैंने महाराज की आज्ञानुसार किया यह बतात है । इससे पता चलता है कि, महाराज से लेकर नगर के सेठ, साहुकार, महाजन और राज्याधिकारी सभी विलास में मग्न है ।

8.5 महालिंगम और पापनाशन -

ये दोनों शादी के बाद भी अन्य वेश्याओं के प्रेम में बध्द है । महालिंगम वेश्या ललिता के साथ विलासरत था । पापनाशन का विवाह पहले कन्नगी के साथ होनेवाला था लेकिन बाद में टूट जाता है, क्योंकी मानाइहन को पता चलता है कि, वह वेश्यागामी है ।

अनैतिक आचरण से आदमी खुद आगे न बढ़कर गहरी खाई में अपने को धकेलता है । "जिस समाज में आर्थिक विषमता और उससे उत्पन्न धार्मिक तथा नैतिक मूल्यों का संभ्रम हो, उसमें समस्याएँ ही समस्याएँ मनुष्य के विकास में बाधा पहुँचाती है । " [27] जैसे इस उपन्यास में नागर ने दिखाने की कोशिश की है । उपन्यास में ज्यादातर पुरुषपात्र विलासी ही दिखाए गए है । मृंदगवादक माणिक्यम् पिल्ले और चेलम्मा का प्रेमी भी शीलभ्रष्ट व्यक्तियों में गिने जा सकते है जिनका उल्लेख नाममात्र है । इस प्रकार उपन्यास में शीलभ्रष्ट व्यक्तियों द्वारा नारी पीड़ा तथा खुले आम शोषण का चित्रण हुआ है ।

निष्कर्ष

प्रेमचंद तथा प्रेमचंदात्तर उपन्यासकारों ने वेश्या समस्या को उठाकर अपने उपन्यासों में उनकी स्थिति तथा समाज का उनकी ओर देखने का दृष्टिकोन स्पष्ट किया है । अपने उपन्यासों में वेश्याओं की समस्याएँ स्पष्ट कर समाज में नवजागरण लाना चाहते है । सामाजिक उपन्यासकार होने के कारण नागर ने 'सुहाग के नूपुर' उपन्यास में वेश्याओं की असंख्य वेदनाओं को स्पष्ट कर अंत में उन्हे जो यातनाएँ भोगनी पड़ती है । इसका यथार्थ चित्रण किया है ।

'सुहाग के नूपुर ' उपन्यास में चित्रित समाज में अपने अपने रीति - रिवाज, प्रथा - परम्पराएँ, उत्सावों का चित्रण कर सांस्कृतिक झाँकिया प्रस्तुत की गई हैं । उच्च-वर्ग और निम्न-वर्ग के बीच संघर्ष दिखाकर उच्च वर्गीय लोगों की विलासप्रियता को चित्रित किया है । वेश्याओं की ओर देखने का उच्च वर्गीयों का रवैय्या सिर्फ मनोरंजन, मनबहलाव और विलासिता की पूर्ति यही होता है । उच्च वर्गीय पात्रों द्वारा समाज की दांभिकता पर करारा व्यंग्य किया गया है । नगर के व्यापारियों का व्यापार में ध्यान न होने से तथा वेश्याओ पर धन लुटाने से आर्थिक स्थिति हीन-दीन होती है । वेश्याओं के कोठों पर व्यापारिक सौदे होने के कारण व्यापारिक कोठियों का दीवाला पीटने का चित्रण यथार्थ रुप में हुआ है ।

प्रस्तुत उपन्यास में धार्मिक वातावरण का चित्रण हुआ है । सामान्य लोगों के साथ - साथ वेश्याओं को भी धार्मिक रीति - रिवाजों को निभाते हुए दिखाया है । देवदासी प्रथा को चित्रित कर उसके पीछे छिपे रूढ़ीग्रस्तता तथा अंधश्रद्धा को व्यक्त किया है । धर्म की आड़ लेकर देवदासी भी वेश्याओं की तरह विलासी जीवन व्यतीत करती है, इस सत्य को उजागर किया है । इनमें भी प्रतिष्ठित-अप्रतिष्ठित, उच्च - नीच भेद दिखाया गया है । माधवी और कोवलन तथा कोवलन और कन्नगी के बीच आत्मिक प्रेमसंबंध दिखाकर कुलवधु और नगरवधु के बीच संघर्ष दिखाया है । कुलवधु कन्नगी को सर्वगुणसंपन्न होते हुए भी अंत तक कष्टमय जीवन जीते हुए दिखाकर नागर ने आदर्श भारतीय पतिव्रता पत्नी की व्यथा दिखाई है ।वेश्याएँ भी एक पुरुषव्रत तथा कुललक्ष्मी बनने के लिए ललायित होती है । लेकिन यह समाज उसे वेश्या बनने के लिए मजबूर करता है इस वास्तविकता पर प्रकाश डाला गया है । वेश्याओं से संबंध रखने पर उनकी संतानों को सामाजिक प्रतिष्ठा नहीं मिलती और उन्हें भी विरासत के तौर पर माँ का ही व्यवसाय करना पड़ता है । रोगग्रस्त हो जाने पर उनका स्पर्श भी पाप माना जाता है । ऐसी

वेश्याओं का कारुणिक चित्रण चेलम्मा के रुप में किया गया है । छोटी-छोटी बच्चियों को मार-पीटकर वेश्या बनाया जाता है । इन्हें भोगनेवाले उच्च वर्गीय शीलभ्रष्ट व्यक्तियों का पर्दाफाश किया है । ना ही वे अपनी पत्नीयों को खुश रख पाते है और ना ही वेश्याओं को खुश रख पाते है , इससे सिर्फ पारिवारिक टूटन ही होती है, जिससे किसी का भी भला नहीं होता ।

हजारों सालों से वेश्या समस्या हर युग में रूप बदल-बदलकर हमारे सामने प्रस्तुत हुई है । यह सिर्फ भारत में ही नहीं सारे विश्व की ज्वलंत समस्या बन गई है । नागर ने अपने सामाजिक उपन्यासों के द्वारा जीवन की कई समस्याओं पर प्रकाश डाला है । अंत में मानव मन का सत्य बताया है की, मनुष्य जब सभी ओर से निराश होता है, तो ईश्वर की शरण में जाता है । इस प्रकार नागर ने विवेच्य उपन्यास में समाज जीवन का चित्रण यथार्थता की धरातल पर किया है । धनी सेठ कोवलन तथा कन्नगी की स्थिति देख मन दर्द से भर उठता है । माधवी को पागल अवस्था में दिखाकर वेश्या के एकनिष्ठ प्रेम की उदात्तता दिखाई है । कुलवधु बनने की जिद में वह इतनी आगे बढ़ती है कि, अंत में उसे समाज वेश्या बनाकर ही छोड़ता है । इस आघात को वह बर्दाश्त नहीं कर पाती । नागर ने प्रस्तुत उपन्यास में वेश्या और सती के गुण -दोषों का वर्णन कर वेश्या के प्रति सहानुभूति का भाव दिखाकर नारी के सती रुप की यशोगाथा गाई है ।

१९६० में स्थित सामाजिक स्थिति का चित्रण करने में नागर को सफलता मिली है ।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. डॉ. हेमराज कौशिक - अमृतलाल नागर के उपन्यास पृ. क्रं. 70
2. डॉ.बैजनाथ शुक्ल - भगवतीचरण वर्मा के उपन्यासों में युगचेतना पृ.क्रं. 41
3. अमृतलाल नागर - सुहाग के नूपुर पृ.क्रं. 53
4. लज्जाराम शर्मा - आदर्श हिंदू, तिसरा भाग पृ.क्रं. 214
5. सोती वीरेंद्र चंद्र - भारतीय संस्कृती के मूल तत्व पृ.क्रं. 8
6. अमृतलाल नागर - सुहाग के नूपुर पृ.क्रं. 12
7. अमृतलाल नागर - सुहाग के नूपुर पृ.क्रं. 23
8. अमृतलाल नागर - सुहाग के नूपुर पृ.क्रं. 24
9. डॉ. योगेश सूरी-यशपाल के उपन्यासों में नारी जीवन की समस्याएँ पृ.क्रं. 184
10. अमृतलाल नागर - सुहाग के नूपुर पृ.क्रं. 44
11. अमृतलाल नागर - सुहाग के नूपुर पृ.क्रं. 197
12. राजेंद्र यादव - हंस (मासिक पत्रिका) अगस्त 2002 पृ.क्रं. 44
13. अमृतलाल नागर - सुहाग के नूपुर पृ.क्रं. 219
14. डॉ.राधा गिरधारी-राजेंद्र यादव के उपन्यासों में व्यक्ति और समाज पृ.क्रं. 112
15. बाळकृष्ण गुप्त - हिंदी उपन्यास : सामाजिक संदर्भ पृ.क्रं. 35
16. अमृतलाल नागर - सुहाग के नूपुर पृ.क्रं. 71
17. अमृतलाल नागर - सुहाग के नूपुर पृ.क्रं. 106
18. अमृतलाल नागर - सुहाग के नूपुर पृ.क्रं. 218 - 219
19. अमृतलाल नागर - सुहाग के नूपुर पृ.क्रं. 55
20. प्रेमचंद - सेवासदन पृ.क्रं. 15
21. अमृतलाल नागर - सुहाग के नूपुर पृ.क्रं. 199
22. अमृतलाल नागर - सुहाग के नूपुर पृ.क्रं. 156
23. अमृतलाल नागर - सुहाग के नूपुर पृ.क्रं. 171
24. डॉ.चंद्रकांत बांदिवडेकर - हिंदी और मराठी के सामाजिक उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन पृ.क्र. 222
25. अमृतलाल नागर - सुहाग के नूपुर पृ.क्रं. 78
26. अमृतलाल नागर - सुहाग के नूपुर पृ.क्रं. 55
27. डॉ.चंद्रकांत बांदिवडेकर - हिंदी और मराठी के सामाजिक उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन पृ.क्र. 148